Hindi Easy-to-Read Version

Language: हिन्दी (Hindi)
Provided by: Bible League International.

Copyright and Permission to Copy

Taken from the Hindi Easy-to-Read Version © 1995 by Bible League International.
PDF generated on 2017-08-22 from source files dated 2017-08-22.
a28f7793-64e5-53d1-b0c7-eb243e526a41
ISBN: 978-1-5313-1305-0

नहेम्याह

नहेम्याह की विनती

१ ये हकल्याह के पुत्र नहेम्याह के वचन हैं:
मैं, नहेम्याह, किसलवे नाम के महीने में शूशन
नाम की राजधानी नगरी में था। यह वह समय था
जब अर्तक्षत्र नाम के राजा के राज का बीसवाँ
वर्ष *चल रहा था। २ मैं जब अभी शूशन में ही
था तो हनानी नाम का मेरा एक भाई और कुछ
अन्य लोग यहूदा से वहाँ आये। मैंने उनसे वहाँ
रह रहे यहूदियों के बारे में पूछा। ये वे लोग थे जो
बंधुआपन से बच निकले थे और अभी तक यहूदा
में रह रहे थे। मैंने उनसे यरूशलेम नगरी के बारे
में भी पूछा था।

३ हनानी और उसके साथ के लोगों ने बताया, "हे
नहेम्याह, वे यहूदी जो बंधुआपन से बच निकले थे
और जो यहूदा में रह रहे हैं, गहन विपत्ति में पड़े
हैं। उन लोगों के सामने बहुत सी समस्याएँ हैं और
वे बड़े लज्जित हो रहे हैं। क्यों? क्योंकि यरूशलेम
का नगर—परकोटा ढह गया है और उसके प्रवेश
द्वार आग से जल कर राख हो गये हैं।"

४ मैंने जब यरूशलेम के लोगों और नगर
परकोटे के बारे में वे बातें सुनीं तो मैं बहुत व्याकुल
हो उठा। मैं बैठ गया और चिल्ला उठा। मैं बहुत
व्याकुल था। बहुत दिन तक मैं स्वर्ग के परमेश्वर
से प्रार्थना करते हुए उपवास करता रहा। ५ इसके
बाद मैंने यह प्रार्थना की :

"हे यहोवा, हे स्वर्ग के परमेश्वर, तू महान
है तथा तू शक्तिशाली परमेश्वर है। तू ऐसा
परमेश्वर है जो उन लोगों के साथ अपने
प्रेम की वाचा का पालन करता है जो तुझसे
प्रेम करते हैं और तेरे आदेशों पर चलते हैं।
६ "अपनी आँखें और अपने कान खोल।
कृपा करके तेरे सामने तेरा सेवक रात दिन
जो प्रार्थना कर रहा है, उस पर कान दे।
मैं तेरे सेवक, इस्राएल के लोगों के लिये
विनती कर रहा हूँ। मैं उन पापों को स्वीकार
करता हूँ जिन्हें हम इस्राएल के लोगों ने
तेरे विरूद्ध किये हैं। मैंने तेरे विरूद्ध जो पाप
किये हैं, उन्हें मैं स्वीकार कर रहा हूँ तथा मेरे
पिता के परिवार के दूसरे लोगों ने तेरे विरूद्ध
जो पाप किये हैं, मैं उन्हें भी स्वीकार करता
हूँ। ७ हम इस्राएल के लोग तेरे लिये बहुत
बुरे रहे हैं। हमने तेरे उन आदेशों, अध्यादेशों
तथा विधान का पालन नहीं किया है जिन्हें
तूने अपने सेवक मूसा को दिया था।
८ "तूने अपने सेवक मूसा को जो शिक्षा
दी थी, कृपा करके उसे याद कर। तूने
उससे कहा था, 'यदि इस्राएल के लोगों
ने अपना विश्वास नहीं बनाये रखा तो मैं
तुम्हें तितर—बितर करके दूसरे देशों में फैला
दूँगा। ९ किन्तु यदि इस्राएल के लोग मेरी
ओर लौटे और मेरे आदेशों पर चले तो मैं
ऐसा करूँगा : मैं तुम्हारे उन लोगों को, जिन्हें
अपने घरों को छोड़कर धरती के दूसरे छोरों
तक भागने को विवश कर दिया गया था, वहाँ
से मैं उन्हें इकट्ठा करके उस स्थान पर वापस
ले आऊँगा जिस स्थान को अपनी प्रजा के
लिये मैंने चुना है।'
१० "इस्राएल के लोग तेरे सेवक हैं और
वे तेरे ही लोग हैं। तू अपनी महाशक्ति
का उपयोग करके उन लोगों को बचा कर
सुरक्षित स्थान पर ले आया है। ११ इसलिए हे
यहोवा, कृपा करके अब मेरी विनती सुन। मैं
तेरा सेवक हूँ और कृपा करके अपने सेवकों
की विनती पर कान दे जो तेरे नाम को
मान देना चाहते हैं। कृपा करके आज मुझे
सहारा दे। जब मैं राजा से सहायता माँगू
तब तू मेरी सहायता कर। मुझे सफल बना।
मुझे सहायता दे ताकि मैं राजा के लिए
प्रसन्नतादायक बना रहूँ।"
उस समय मैं राजा के दाखमधु सेवक था।

राजा अर्तक्षत्र का नहेम्याह को यरूशलेम भेजना

२ १ राजा अर्तक्षत्र के बीसवें वर्ष के नीसान नाम
के महीने †में राजा के लिये थोड़ी दाखमधु
लाई गयी। मैंने उस दाखमधु को लिया और राजा
को दे दिया। मैं जब पहले राजा के साथ था तो
दु:खी नहीं हुआ था किन्तु अब मैं उदास था। २ इस
पर राजा ने मुझसे पूछा, "क्या तू बीमार है? तू
उदास क्यों दिखाई दे रहा है? मेरा विचार है तेरा
मन दु:ख से भरा है।"
इससे मैं बहुत अधिक डर गया। ३ किन्तु यद्यपि
मैं डर गया था किन्तु फिर भी मैंने राजा से कहा,

---

*१ :१ किसलवे ... बीसवें वर्ष दिसंबर लगभग ई.पू. ४४४ वर्ष यह समय रहा होगा।
†२ :१ निसान नाम के महिने अर्थात् मार्च—अप्रेल ई.पू. ४४३

"राजा जीवित रहें! मैं इसलिए उदास हूँ कि वह नगर जिसमें मेरे पूर्वज दफनाये गये थे उजाड़पड़ा है तथा उस नगर के प्रवेश द्वार आग से भस्म हो गये हैं।"

४ फिर राजा ने मुझसे कहा, "इसके लिये तू मुझसे क्या करवाना चाहता है?"

इससे पहले कि मैं उत्तर देता, मैंने स्वर्ग के परमेश्वर से विनती की। ५ फिर मैंने राजा को उत्तर देते हुए कहा, "यदि यह राजा को भाये और यदि मैं राजा के प्रति सच्चा रहा हूँ तो यहूदा के नगर यरूशलेम में मुझे भेज दिया जाये जहाँ मेरे पूर्वज दफनाये हुए हैं। मैं वहाँ जाकर उस नगर को फिर से बसाना चाहता हूँ।"

६ रानी राजा के बराबर बैठी हुई थी, सो राजा और रानी ने मुझसे पूछा, "तेरी इस यात्रा में कितने दिन लगेंगे? यहाँ तू कब तक लौट आयेगा?"

राजा मुझे भेजने के लिए राजी हो गया। सो मैंने उसे एक निश्चित समय दे दिया। ७ मैंने राजा से यह भी कहा, "यदि राजा को मेरे लिए कुछ करने में प्रसन्नता हो तो मुझे यह माँगने की अनुमति दी जाये। कृपा करके परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों को दिखाने के लिये कुछ पत्र दिये जायें। ये पत्र मुझे इसलिए चाहिए ताकि वे राज्यपाल यहूदा जाते हुए मुझे अपने—अपने इलाकों से सुरक्षापूर्वक निकलने दें। ८ मुझे द्वारों, दीवारों, मन्दिरों के चारों ओर के प्राचीरों और अपने घर के लिये लकड़ी की भी आवश्यकता है। इसलिए मुझे आपसे आसाप के नाम भी एक पत्र चाहिए, आसाप आपके जंगलात का हाकिम है।"

सो राजा ने मुझे पत्र और वह हर वस्तु दे दी जो मैंने मांगी थी। क्योंकि परमेश्वर मेरे प्रति दयालु था इसलिए राजा ने यह सब कर दिया था।

९ इस तरह मैं परात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों के पास गया और उन्हें राजा के द्वारा दिये गये पत्र दिखाये। राजा ने सेना के अधिकारी और घुड़सवार सैनिक भी मेरे साथ कर दिये थे। १० सम्बल्लत और तोबियाह नाम के दो व्यक्तियों ने मेरे कामों के बारे में सुना। वे यह सुनकर बहुत बेचैन और क्रोधित हुए कि कोई इस्राएल के लोगों की मदद के लिये आया है। सम्बल्लत होरोन का निवासी था और तोबियाह अम्मोनी का अधिकारी था।

नहेम्याह द्वारा यरूशलेम के परकोटे का निरीक्षण

११-१२ मैं यरूशलेम जा पहुँचा और वहाँ तीन दिन तक ठहरा और फिर कुछ लोगों को साथ लेकर मैं रात को बाहर निकल पड़ा। परमेश्वर ने यरूशलेम के लिये कुछ करने की जो बात मेरे मन में बसा दी थी उसके बारे में मैंने किसी को कुछ भी नहीं बताया था। उस घोड़े के सिवा, जिस पर मैं सवार था, मेरे साथ और कोई घोड़े नहीं थे। १३ अभी जब अंधेरा ही था तो मैं तराई द्वार से होकर गुज़रा। अजगर के कुएँ की तरफ़ मैंने अपना घोड़ा मोड़ दिया तथा मैं उस द्वार पर भी घोड़े को ले गया, जो कूड़ा फाटक की ओर खुलता था। मैं यरूशलेम के उस परकोटे का निरीक्षण कर रहा था जो टूटकर ढह चुका था। मैं उन द्वारों को भी देख रहा था जो जल कर राख हो चुके थे। १४ इसके बाद मैं सोते के फाटक की ओर अपने घोड़े को ले गया और फिर राजसरोवर के पास जा निकला। किन्तु जब मैं निकट पहुँचा तो मैंने देखा कि वहाँ मेरे घोड़े के निकलने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है। १५ इसलिए अन्धेरे में ही मैं परकोटे का निरीक्षण करते हुए घाटी की ओर ऊपर निकल गया और अन्त में मैं लौट पड़ा और तराई के फाटक से होता हुआ भीतर आ गया। १६ उन अधिकारियों और इस्राएल के महत्वपूर्ण लोगों को यह पता नहीं चला कि मैं कहाँ गया था। वे यह नहीं जान पाये कि मैं क्या कर रहा था। मैंने यहूदियों, याजकों, राजा के परिवार, हाकिमों अथवा जिन लोगों को वहाँ काम करना था, अभी कुछ भी नहीं बताया था।

१७ इसके बाद मैंने उन सभी लोगों से कहा, "यहाँ हम जिन विपत्तियों में पड़े हैं, तुम उन्हें देख सकते हो। यरूशलेम खण्डहरों का ढेर बना हुआ है तथा इसके द्वार आग से जल चुके हैं। आओ, हम यरूशलेम के परकोटे का फिर से निर्माण करें। इससे हमें भविष्य में फिर कभी लज्जित नहीं रहना पड़ेगा।"

१८ मैंने उन लोगों को यह भी कहा कि मुझ पर परमेश्वर की कृपा है। राजा ने मुझसे जो कुछ कहा था, उन्हें मैंने वे बातें भी बतायीं। इस पर उन लोगों ने उत्तर देते हुए कहा, "आओ, अब हम काम करना शुरु करें!" सो उन्होंने उस उत्तम कार्य को करना आरम्भ कर दिया। १९ किन्तु होरोन के सम्बल्लत अम्मोनी के अधिकारी तोबियाह और अरब के गेशेम ने जब यह सुना कि फिर से निर्माण कर रहे हैं तो उन्होंने बहुत भद्दे ढंग से हमारा मजाक उड़ाया

और हमारा अपमान किया। वे बोले, "यह तुम क्या कर रहे हो? क्या तुम राजा के विरोध में हो रहे हो?"

२० किन्तु मैंने तो उन लोगों से बस इतना ही कहा : "हमें सफल होने में स्वर्ग का परमेश्वर हमारी सहायता करेगा। हम परमेश्वर के सेवक हैं और हम इस नगर का फिर से निर्माण करेंगे। इस काम में तुम हमारी मदद नहीं कर सकते। यहाँ यरूशलेम में तुम्हारा कोई भी पूर्वज पहले कभी भी नहीं रहा। इस धरती का कोई भी भाग तुम्हारा नहीं है। इस स्थान में बने रहने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है!"

परकोटा बनाने वाले

३ १ वहाँ के महायाजक का नाम था एल्याशीब। एल्याशीब और उसके साथी (याजक) निर्माण का काम करने के लिये गये और उन्होंने भेड़ द्वार का निर्माण किया। उन्होंने प्रार्थनाएँ की और यहोवा के लिये उस द्वार को पवित्र बनाया। उन्होंने द्वार के दरवाजों को दीवार में लगाया। उन याजकों ने यरूशलेम के परकोटे पर काम करते हुए हम्मेआ के गुम्बद तथा हननेल के गुम्बद तक उसका निर्माण किया। उन्होंने प्रार्थनाएँ कीं और यहोवा के लिये अपने कार्य को पवित्र बनाया।

२ याजकों के द्वारा बनाएँ गए परकोटे से आगे के परकोटे को यरीहो के लोगों ने बनाया और फिर यरीहो के लोगों द्वारा बनाये गये परकोटे के आगे के परकोटे का निर्माण इम्री के पुत्र जक्कूर ने किया।

३ फिर हस्सना के पुत्रों ने मछली दरवाजे का निर्माण किया। उन्होंने वहाँ यथास्थान कड़ियाँ बैठायीं। उस भवन में उन्होंने दरवाजे लगाये और फिर दरवाजों पर ताले लगाये और मेखें जड़ीं।

४ उरियाह के पुत्र मरेमोत ने परकोटे के आगे के भाग की मरम्मत की। (उरियाह हक्कोस का पुत्र था।)

मशूल्लाम, जो बरेक्याह का पुत्र था, उसने परकोटे के उससे आगे के भाग की मरम्मत की। (बरेक्याह मशेजबेल का पुत्र था।)

बाना के पुत्र सादोक ने इससे आगे की दीवार को मज़बूत किया।

५ दीवार के आगे का भाग तकोई लोगों द्वारा सुदृढ़ किया गया किन्तु तकोई के मुखियाओं ने अपने स्वामी नहेम्याह की देख रेख में काम करने से मना कर दिया।

६ पुराने दरवाज़े की मरम्मत का काम योयादा और मशूल्लाम ने किया। योयादा पासेह का पुत्र था और मशूल्लाम बसोदयाह का पुत्र था। उन्होंने कड़ियों को यथास्थान बैठाया। उन्होंने कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाई और फिर दरवाज़े पर ताले लगाये तथा मेखें जड़ीं।

७ इसके आगे के परकोटे की दीवार की मरम्मत गिबोनी लोगों और मिस्पा के रहने वालों ने बनाई। गिबोन की ओर से मलत्याह और मेरोनोती की ओर से यादोन ने काम किया। गिबोन और मेरोनोती वे प्रदेश हैं जिनका शासन इफ़रात नदी के पश्चिमी क्षेत्र के राज्यपालों द्वारा किया जाता था।

८ परकोटे की दीवार के अगले भाग की मरम्मत हईयाह के पुत्र उजीएल ने की। उजीएल सुनार हुआ करता था। हनन्याह सुगन्ध बनाने का काम करता था। इन लोगों ने यरूशलेम के परकोटे की चौड़ी दीवार तक मरम्मत करके उसका निर्माण किया।

९ इससे आगे की दीवार की मरम्मत हूर के पुत्र रपायाह ने की। रपायाह आधे यरूशलेम का प्रशासक था।

१० परकोटे की दीवार का दूसरा हिस्सा हरुपम के पुत्र यदायाह ने बनाया। यदायाह ने अपने घर के ठीक बाद की दीवार की मरम्मत की। इसके बाद के हिस्से की मरम्मत का काम हशब्नयाह के पुत्र हत्तूश ने किया। ११ हारीम के पुत्र मल्कियाह तथा पहत्मोआब के पुत्र हश्शूब ने परकोटे के अगले एक दूसरे हिस्से की मरम्मत की। इन ही लोगों ने भट्टों की मीनार की मरम्मत भी की।

१२ शल्लूम जो हल्लोहेश का पुत्र था, उसने परकोटे की दीवार के अगले हिस्से को बनाया। इस काम में उसकी पुत्रियों ने भी उसकी मदद की। शल्लूम यरूशलेम के दूसरे आधे हिस्से का राज्यपाल था।

१३ हानून नाम के एक व्यक्ति तथा जानोह नगर के निवासियों ने तराई फाटक की मरम्मत की। उन ही लोगों ने तराई फाटक का निर्माण किया। उन्होंने कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाईं और फिर दरवाजों पर ताले लगाये तथा मेखें जड़ीं। उन्होंने पाँच सौ गज लम्बी परकोटे की दीवार की मरम्मत की। उन्होंने कुरड़ी—दरवाजे तक इस दीवार का निर्माण किया।

१४ रेकाब के पुत्र मल्कियाह ने कुरड़ी—दरवाज़ें की मरम्मत की। मल्कियाह बेथक्केरेम ज़िले का हाकिम था। उसने दरवाजों की मरम्मत की, कब्जों पर जोड़ियाँ चढ़ाईं और फिर दरवाज़ों पर ताले लगवा कर मेखें जड़ीं।

१५ कोल्होज़े के पुत्र शल्लूम ने स्रोत द्वार की
मरम्मत की। शल्लूम मिस्पा कस्बे का राज्यपाल
था उसने उस दरवाज़े को लगवाया और उसके
ऊपर एक छत डलवाई। कब्जों पर जोड़ियाँ
चढ़ाईं और फिर दरवाज़ों पर ताले लगवाकर मेखें
जड़ीं। शल्लूम ने शेलह के तालाब की दीवार की
मरम्मत भी करवाई। यह तालाब राजा के बगीचे
के पास ही था। दाऊद की नगरी को उतरने वाली
सीढ़ियों तक समूची दीवार की भी उसने मरम्मत
करवाई।
१६ अजबूक के पुत्र नहेम्याह ने अगले हिस्से
की मरम्मत करवाई। यह नहेम्याह बेतसूर नाम
के ज़िले के आधे हिस्से का राज्यपाल था। उसने
उस स्थान तक भी मरम्मत करवाई जो दाऊद
के कब्रिस्तान के सामने पड़ता था। आदमियों
के बनाये हुए तालाब तक, तथा वीरों के निवास
नामक स्थान तक भी उसने मरम्मत का यह कार्य
करवाया।
१७ लेवीवंश परिवार सूह के लोगों ने परकोटे
के अगले हिस्से की मरम्मत की। लेवीवंश के
इन लोगों ने बानी के पुत्र रहूम की देखरेख में
काम किया। अगले हिस्से की मरम्मत हशब्याह
ने की। हशब्याह कीला नाम कस्बे के आधे भाग
का प्रशासक था। उसने अपने ज़िले की ओर से
मरम्मत का यह काम करवाया।
१८ अगले हिस्से की मरम्मत उन के भाइयों ने
की। उन्होंने हेनादाद के पुत्र बव्वै की अधीनता
में काम किया। बव्वै कीला कस्बे के आधे हिस्से
का प्रशासक था।
१९ इससे अगले हिस्से की मरम्मत का काम
येशु के पुत्र एज़ेर ने किया। एज़ेर मिस्पा का
राज्यपाल था। उसने शस्त्रागार से लेकर परकोटे
की दीवार के कोने तक मरम्मत का काम किया।
२० इसके बाद बारुक के पुत्र जब्बै ने उससे अगले
हिस्से की मरम्मत की। उसने उस कोने से लेकर
एल्याशीब के घर के द्वार तक दीवार के इस
हिस्से की बड़ी मेहनत से मरम्मत की। एल्याशीब
महायाजक था। २१ उरियाह के पुत्र मरेमोत ने
एल्याशीब के घर के दरवाज़े से लेकर उसके घर के
अंत तक परकोटे के अगले हिस्से की मरम्मत की।
उरियाह, हक्कोस का पुत्र था। २२ इसके बाद की
दीवार के हिस्से की मरम्मत का काम उन याजकों
द्वारा किया गया जो उस इलाके में रहते थे।
२३ फिर बिन्यामीन और हश्शूब ने अपने घरों के
आगे के नगर परकोटे के हिस्सों की मरम्मत की।
उसके घर के बाद की दीवार अनन्याह के पोते और
मासेयाह के पुत्र अजर्याह ने बनवाई।
२४ फिर हेनादाद के पुत्र बिन्नूई ने अजर्याह के
घर से लेकर दीवार के मोड़ और फिर कोने तक के
हिस्से की मरम्मत की।
२५ इसके बाद ऊजै के पुत्र पालाल ने परकोटे के
उस मोड़ से लेकर बुर्ज तक की दीवार की मरम्मत
के लिये काम किया। यह मीनार राजा के ऊपरी
भवन पर थी। यह राजा के पहरेदारों के आँगन
के पास ही था। पालाल के बाद परोश के पुत्र
पदायाह ने इस काम को अपने हाथों में लिया।
२६ मन्दिर के जो सेवक ओपेल पहाड़ी पर रहा
करते थे उन्होंने परकोटे के अगले हिस्से की
जल—द्वार के पूर्वी ओर तथा उसके निकट के
गुम्बद तक की मरम्मत का काम किया।
२७ विशाल गुम्बद से लेकर ओपेल की पहाड़ी
से लगी दीवार तक के समूचे भाग की मरम्मत का
काम तकोई के लोगों ने पूरा किया।
२८ अश्व—द्वार के ऊपरी हिस्से की मरम्मत का
काम याजकों ने किया। हर याजक ने अपने घर
के आगे की दीवार की मरम्मत की। २९ इम्मेर के
पुत्र सादोक ने अपने घर के सामने के हिस्से की
मरम्मत की। फिर उससे अगले हिस्से की मरम्मत
का काम शकन्याह के पुत्र समयाह ने पूरा किया
समयाह पूर्वी फाटक का द्वारपाल था।
३० दीवार के बचे हुए हिस्से की मरम्मत का काम
शेलेम्याह के पुत्र हनन्याह और सालाप के पुत्र
हानून ने पूरा किया। (हानून सालाप का छठां पुत्र
था।)
बेरेक्याह के पुत्र मशुल्लाम ने अपने घर
के आगे की दीवार की मरम्मत की। ३१ फिर
मल्कियाह ने मन्दिर के सेवकों के घरों और
व्यापारियों के घरों तक की दीवार की मरम्मत की।
यानी निरीक्षण द्वार के सामने से दीवार के कोने के
ऊपरी कक्ष तक के हिस्सा की मरम्मत मल्कियाह
ने की। ३२ मल्कियाह एक सुनार हुआ करता था।
कोने के ऊपरी कमरे से लेकर भेड़—द्वार तक की
बीच की दीवार का समूचा हिस्सा सुनारों और
व्यापारियों ने ठीक किया।

सम्बल्लत और तोबियाह

४ १ जब सम्बल्लत ने सुना कि हम लोग
यरूशलेम के नगर परकोटे का पुन: निर्माण
कर रहे हैं, तो वह बहुत क्रोधित और व्याकुल
हो उठा। वह यहूदियों की हँसी उड़ाने लगा।
२ सम्बल्लत ने अपने मित्रों और सेना से शोमरोन

में इस विषय को लेकर बातचीत की। उसने कहा,
"ये शक्तिहीन यहूदी क्या कर रहे हैं ? उनका विचार
क्या है ? क्या वे अपनी बलियाँ चढ़ा पायेंगे ? शायद
वे ऐसा सोचते हैं कि वे एक दिन में ही इस निर्माण
कार्य को पूरा कर लेंगे। धूल मिट्टी के इस ढेर में
से वे पत्थरों को उठा कर फिर से नया जीवन नहीं
दे पायेंगे। ये तो अब राख और मिट्टी के ढेर बन
चुके हैं !"

३ अम्मोन का निवासी तोबियाह सम्बल्लत के
साथ था। तोबियाह बोला, "ये यहूदी जो निर्माण
कर रहे उसके बारे में ये क्या सोचते हैं ? यदि कोई
छोटी सी लोमड़ी भी उस दीवार पर चढ़ जाये तो
उनकी वह पत्थरों की दीवार ढह जायेगी !"

४ तब नहेम्याह ने परमेश्वर से प्रार्थना की
और वह बोला, "हे हमारे परमेश्वर, हमारी विनती
सुन। वे लोग हमसे घृणा करते हैं। सम्बल्लत और
तोबियाह हमारा अपमान कर रहे हैं। इन बुरी
बातों को तू उन ही के साथ घटा दे। उन्हें उन
व्यक्तियों के समान लज्जित कर जिन्हें बन्दी के
रूप में ले जाया जा रहा हो। ५ उनके उस अपराध
को दूर मत कर अथवा उनके उन पापों को क्षमा
मत कर जिन्हें उन्होंने तेरे देखते किया है। उन्होंने
परकोटे को बनाने वालों का अपमान किया है तथा
उनकी हिम्मत तोड़ी है।"

६ हमने यरूशलेम के परकोटे का पुन: निर्माण
किया है। हमने नगर के चारों ओर दीवार बनाई
है। किन्तु उसे जितनी ऊँची होनी चाहिये थी, वह
उससे आधी ही रह गयी है। हम यह इसलिए कर
पाये कि हमारे लोगों ने अपने समूचे मन से इस
कार्य को किया।

७ किन्तु सम्बल्लत, तोबियाह, अरब के लोगों,
अम्मोन के निवासियों और अशदोद के रहने वाले
लोगों को उस समय बहुत क्रोध आया। जब
उन्होंने यह सुना कि यरूशलेम के परकोटे पर लोग
निरन्तर काम कर रहे हैं। उन्होंने सुना था कि लोग
उस दीवार की दरारों को भर रहे हैं। ८ सो वे सभी
लोग आपस में एकत्र हुए और उन्होंने यरूशलेम
के विरुद्ध योजनाएँ बनाईं। उन्होंने यरूशलेम के
विरुद्ध गड़बड़ी पैदा करने का षड़यन्त्र रचा।
उन्होंने यह योजना भी बनाई कि नगर के ऊपर
चढ़ाई करके युद्ध किया जाये। ९ किन्तु हमने अपने
परमेश्वर से बिनती की और नगर परकोटे की
दीवारों पर हमने पहरेदार बैठा दिये ताकि वे वहाँ
दिन—रात रखवाली करें जिससे हम उन लोगों का
मुकाबला करने के लिए तुरन्त तैयार रहें।

१० उधर उसी समय यहूदा के लोगों ने कहा,
"कारीगर लोग थकते जा रहे हैं। वहाँ बहुत सी
धूल—मिट्टी और कूड़ा करकट पड़ा है। सो हम
अब परकोटे पर निर्माण कार्य करते नहीं रह सकते
११ और हमारे शत्रु कह रहे हैं, 'इससे पहले कि
यहूदियों को इसका पता चले अथवा वे हमें देख
लें, हम ठीक उनके बीच पहुँच जायेंगे। हम उन्हें
मार डालेंगे जिससे उनका काम रुक जायेगा।'"

१२ इसके बाद हमारे शत्रुओं के बीच रह रहे
यहूदी हमारे पास आये और उन्होंने हमसे दस बार
यह कहा, "हमारे चारों तरफ़ हमारे शत्रु हैं, हम
जिधर भी मुड़ें, हर कहीं हमारे शत्रु फैले हैं।"

१३ सो मैंने परकोटे की दीवार के साथ—साथ
जो स्थान सबसे नीचे पड़ते थे, उनके पीछे कुछ
लोगों को नियुक्त कर दिया तथा मैंने दीवार में जो
नाके पड़ते थे, उन पर भी लोगों को लगा दिया।
मैंने समूची दीवारों को उनकी तलवारों, भालों और
धनुष बाणों के साथ वहाँ लगा दिया। १४ मैंने सारी
स्थिति का जायजा लिया और फिर खड़े होकर
महत्वपूर्ण परिवारों, हाकिमों तथा दूसरे लोगों से
कहा, "हमारे शत्रुओं से डरो मत। हमारे स्वामी
को याद रखो। यहोवा महान है और शक्तिशाली
है ! तुम्हें अपने भाईयों, अपने पुत्रों और अपनी
पुत्रियों के लिए यह लड़ाई लड़नी ही है ! तुम्हें
अपनी पत्नियों और अपने घरों के लिए युद्ध करना
ही होगा !"

१५ इसके बाद हमारे शत्रुओं के कान में यह
भनक पड़ गयी कि हमें उनकी योजनाओं का पता
चल चुका है। वे जान गये कि परमेश्वर ने उनकी
योजनाओं पर पानी फेर दिया। इसलिए हम सभी
नगर परकोटे की दीवार पर काम करने को वापस
लौट गये। प्रत्येक व्यक्ति फिर अपने स्थान पर
वापस चला गया और अपने हिस्से का काम करने
लगा। १६ उस दिन के बाद से मेरे आधे लोग
परकोटे पर काम करने लगे और मेरे आधेलोग
भालों, ढालों, तीरों और कवचों से सुसज्जित
होकर पहरा देते रहे। यहूदा के उन लोगों के पीछे
जो नगर परकोटे की दीवार का निर्माण कर रहे
थे, सेना के अधिकारी खड़े रहते थे। १७ सामान
ढोनेवाले मजदूर एक हाथ से काम करते तो उनके
दूसरे हाथ में हथियार रखते थे। १८ हर कारीगर
की बगल में, जब वह काम करता हुआ होता,
तलवार बंधी रहती थी। लोगों को सावधान करने
के लिये बिगुल बजाने वाला व्यक्ति मेरे पास ही
रहता। १९ फिर प्रमुख परिवारों, हाकिमों और शेष
दूसरे लोगों को सम्बोधित करते हुए मैंने कहा,

"यह बहुत बड़ा काम है। हम परकोटे के सहारे—सहारे फैले हुए हैं। हम एक दूसरे से दूर पड़ गये हैं। २० सो यदि तुम बिगुल की आवाज़ सुनो. तो उस निर्धारित स्थान पर भाग आना। वहीं हम सब इकट्ठे होंगे और हमारे लिये परमेश्वर युद्ध करेगा!"

२१ इस प्रकार हम यरूशलेम की उस दीवार पर काम करते रहे और हमारे आधे लोगों ने भाले थामे रखे। हम सुबह की पहली किरण से लेकर रात में तारे छिटकने तक काम किया करते थे।

२२ उस अवसर पर लोगों से मैंने यह भी कहा था : "रात के समय हर व्यक्ति और उसका सेवक यरूशलेम के भीतर ही ठहरे ताकि रात के समय में वे पहरेदार रहें और दिन के समय कारीगर।" २३ इस प्रकार हममें से कोई भी कभी अपने कपड़े नहीं उतारता था न मैं, न मेरे साथी, न मेरे लोग और न पहरेदार! हर समय हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने दाहिने हाथ में हथियार तैयार रखा करता था।

नहेम्याह द्वारा गरीबों की सहायता

५ १ बहुत से गरीब लोग अपने यहूदी भाइयों के विरूद्ध शिकायत करने लगे थे। २ उनमें से कुछ कहा करते थे, "हमारे बहुत से बच्चे हैं। यदि हमें खाना खाना है और जीवित रहना है तो हमें थोड़ा अनाज तो मिलना ही चाहिए!"

३ दूसरे लोगों का कहना है, "इस समय अकाल पड़ रहा है। हमें अपने खेत और घर गिरवी रखने पड़ रहे हैं ताकि हमें थोड़ा अनाज मिल सके।"

४ कुछ लोग यह भी कह रहे थे, "हमें अपने खेतों और अँगूर के बगीचों पर राजा का कर चुकाना पड़ता है किन्तु हम कर चुका नहीं पाते हैं इसलिए हमें कर चुकाने के वास्ते धन उधार लेना पड़ता है। ५ उन धनवान लोगों की तरफ़ देखो! हम भी वैसे ही अच्छे हैं जैसे वे हमारे पुत्र भी वैसे ही अच्छे हैं जैसे उनके पुत्र। किन्तु हमें अपने पुत्र—पुत्री दासों के रूप में बेचने पड़ रहे हैं। हममें से कुछ को तो दासों के रूप में अपनी पुत्रियों को बेचना भी पड़ा है! ऐसा कुछ भी तो नहीं है जिसे हम कर सकें! हम अपने खेतों और अँगूर के बगीचों को खो चुके हैं! अब दूसरे लोग उनके मालिक हैं!"

६ जब मैंने उनकी ये शिकायतें सुनीं तो मुझे बहुत क्रोध आया। ७ मैंने स्वयं को शांत किया और फिर धनी परिवारों और हाकिमों के पास जा पहुँचा। मैंने उनसे कहा, "तुम अपने ही लोगों को उस धन पर ब्याज चुकाने के लिये विवश कर रहे हो जिसे तुम उन्हें उधार देते हो! निश्चय ही तुम्हें ऐसा बन्द कर देना चाहिए!" फिर मैंने लोगों की एक सभा बुलाई ८ और फिर मैंने उन लोगों से कहा, "दूसरे देशों में हमारे यहूदी भाइयों को दासों के रूप में बेचा जाता था। उन्हें वापस खरीदने और स्वतन्त्र कराने के लिए हमसे जो बन पड़ा. हमने किया और अब तुम उन्हें फिर दासों के रूप में बेच रहे हो और हमें फिर उन्हें वापस लेना पड़ेगा!"

इस प्रकार वे धनी लोग और वे हाकिम चुप्पी साधे रहे। कहने को उनके पास कुछ नहीं था। ९ सो मैं बोलता चला गया। मैंने कहा, "तुम लोग जो कुछ कर रहे हो, वह उचित नहीं है! तुम यह जानते हो कि तुम्हें परमेश्वर से डरना चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए। तुम्हें ऐसे लज्जापूर्ण कार्य नहीं करने चाहिए जैसे दूसरे लोग करते हैं! १० मेरे लोग, मेरे भाई और स्वयं मैं भी लोगों को धन और अनाज़ उधार पर देते हैं। किन्तु आओ हम उन कर्जों पर ब्याज चुकाने के लिये उन्हें विवश करना बन्द कर दें! ११ इसी समय तुम्हें उन के खेत, अँगूर के बगीचे, जैतून के बाग और उनके घर उन्हें वापस लौटा देने चाहिए और वह ब्याज भी तुम्हें उन्हें लौटा देना चाहिए जो तुमने उनसे वसूल किया है। तुमने उधार पर उन्हें जो धन, जो अनाज़ जो नया दाखमधु और जो तेल दिया है, उस पर एक प्रतिशत ब्याज वसूल किया है!"

१२ इस पर धनी लोगों और हाकिमों ने कहा, "हम यह उन्हें लौटा देंगे और उनसे हम कुछ भी अधिक नहीं माँगेंगे। हे नहेम्याह, तू जैसा कहता है, हम वैसा ही करेंगे।"

इसके बाद मैंने याजकों को बुलाया। मैंने धनी लोगों और हाकिमों से यह प्रतिज्ञा करवाई कि जैसा उन्होंने कहा है, वे वैसा ही करेंगे। १३ इसके बाद मैंने अपने कपड़ों की सलवटें फाड़ते हुए कहा, "हर उस व्यक्ति के साथ, जो अपने वचन को नहीं निभायेगा, परमेश्वर छूछा करेगा। परमेश्वर उन्हें उनके घरों से उखाड़ देगा और उन्होंने जिन भी वस्तुओं के लिये काम किया है वे सभी उनके हाथ से जाती रहेंगी। वह व्यक्ति अपना सब कुछ खो बैठेगा!"

मैंने जब इन बातों का कहना समाप्त किया तो सभी लोग इनसे सहमत हो गये। वे सभी बोले, "आमीन!" और फिर उन्होंने यहोवा की प्रशंसा की और इस प्रकार जैसा उन्होंने वचन दिया था, वैसा ही किया १४ और फिर यहूदा की धरती पर अपने राज्यपाल काल के दौरान न तो मैंने और न मेरे भाईयों ने उस भोजन को ग्रहण किया जो राज्यपाल के लिये न्यायपूर्ण नहीं था। मैंने अपने

भोजन को खरीदने के वास्ते कर चुकाने के लिए कभी किसी पर दबाव नहीं डाला। राजा अर्तक्षत्र के शासन काल के बीसवें साल से बत्तीसवें साल तक मैं वहाँ का राज्यपाल रहा। मैं बारह साल तक यहूदा का राज्यपाल रहा। १५ किन्तु मुझ से पहले के राज्यपालों ने लोगों के जीवन को दूभर बना दिया था। वे राज्यपाल लोगों पर लगभग एक पौंड चाँदी चालीस शकेल देने के लिए दबाव डाला करते थे। उन लोगों पर वे खाना और दाखमधु देने के लिये भी दबाव डालते थे। उन राज्यपालों के नीचे के हाकिम भी लोगों पर हुकूमत चलाते थे और जीवन को और अधिक दूभर बनाते रहते थे। किन्तु मैं क्योंकि परमेश्वर का आदर करता था, और उससे डरता था, इसलिए मैंने कभी वैसे काम नहीं किये। १६ नगर परकोटे की दीवार को बनाने में मैंने कड़ी मेहनत की थी। वहाँ दीवार पर काम करने के लिए मेरे सभी लोग आ जुटे थे!

१७ मैं, अपने भोजन की चौकी पर नियमित रूप से हाकिमों समेत एक सौ पचास यहूदियों को खाने पर बुलाया करता था। मैं चारों ओर के देशों के लोगों को भी भोजन देता था जो मेरे पास आया करते थे। १८ मेरे साथ मेरी मेज़ पर खाना खाने वाले लोगों के लिये इतना खाना सुनिश्चित किया गया था : एक बैल, छ: तगड़ी भेड़ें और अलग—अलग तरीके के पक्षी। इसके अलावा हर दसों दिन मेरी मेज़ पर हर प्रकार का दाखमधु लाया जाता था। फिर भी मैंने कभी ऐसे भोजन की मांग नहीं की, जो राज्यपाल के लिए अनुमोदित नहीं था। मैंने अपने भोजन का दाम चुकाने के लिये कर चुकाने के वास्ते, उन लोगों पर कभी दबाव नहीं डाला। मैं यह जानता था कि वे लोग जिस काम को कर रहे हैं वह बहुत कठिन है। १९ हे परमेश्वर, उन लोगों के लिये मैंने जो अच्छा किया है, तू उसे याद रख।

अधिक समस्याएँ

६ १ इसके बाद सम्बल्लत, तोबियाह, अरब के रहने वाले गेशेम तथा हमारे दूसरे शत्रुओं ने यह सुना कि मैं परकोटे की दीवार का निर्माण करा चुका हूँ। हम उस दीवार में दरवाजे बना चुके थे किन्तु तब तक दरवाजों पर जोड़ियाँ नहीं चढ़ाई गई थीं। २ सो सम्बल्लत और गेशेम ने मेरे पास यह सन्देश भिजवाया : "नहेम्याह, तुम आकर हमसे मिलो। हम ओनो के मैदान में कैफरीम नाम के कस्बे में मिल सकते हैं।" किन्तु उनकी योजना तो मुझे हानि पहुँचाने की थी।

३ सो मैंने उनके पास इस उत्तर के साथ सन्देश भेज दिया : "मैं यहाँ महत्वपूर्ण काम में लगा हूँ। सो मैं नीचे तुम्हारे पास नहीं आ सकता। मैं सिर्फ इसलिए काम बन्द नहीं करना चाहूँगा कि तुम्हारे पास आकर तुमसे मिल सकूँ।"

४ सम्बल्लत और गेमेश ने मेरे पास चार बार वैसे ही सन्देश भेजे और हर बार मैंने भी उन्हें वही उत्तर भिजवा दिया। ५ फिर पाँचवी बार सम्बल्लत ने उसी सन्देश के साथ अपने सहायक को मेरे पास भेजा। उसके हाथ में एक पत्र था जिस पर मुहर नहीं लगी थी। ६ उस पत्र में लिखा था :

"चारों तरफ एक अफवाह फैली हुई है। हर कहीं लोग उसी बात की चर्चा कर रहे हैं और गेमेश का कहना है कि वह सत्य है। लोगों का कहना है कि तू और यहूदी, राजा से बगावत की योजना बना रहे हो और इसी लिए तुम यरूशलेम के नगर परकोटे का निर्माण कर रहे हो। लोगों का यह भी कहना है कि तू ही यहूदियों का नया राजा बनेगा। ७ और यह अफ़वाह भी है कि तू ने यरूशलेम में अपने विषय में यह घोषणा करने के लिए भविष्यवक्ता भी चुन लिये हैं: 'यहूदा में एक राजा है!'

"नहेम्याह! अब मैं तुझे चेतावनी देता हूँ। राजा अर्तक्षत्र इस विषय की सुनवाई करेगा सो हमारे पास आ और हमसे मिल कर इस बारे में बातचीत कर।"

८ सो मैंने सम्बल्लत के पास यह उत्तर भिजवा दिया : "तुम जैसा कह रहे हो वैसा कुछ नहीं हो रहा है। यह सब बातें तुम्हारी अपनी खोपड़ी की उपज हैं।"

९ हमारे शत्रु बस हमें डराने का जतन कर रहे थे। वे अपने मन में सोच रहे थे, "यहूदी लोग डर जायेंगे और काम को चलता रखने के लिये बहुत निर्बल पड़ जायेंगे और फिर परकोटे की दीवार पूरी नहीं हो पायेगी।"

किन्तु मैंने अपने मन में यह विनती की, "परमेश्वर मुझे मजबूत बना।"

१० मैं एक दिन दलायाह के पुत्र शमायाह के घर गया। दलायाह महेतबेल का पुत्र था। शमायाह को अपने घर में ही रुकना पड़ता था। शमायाह ने कहा, "नहेम्याह आओ हम परमेश्वर के मन्दिर के भीतर मिलें। आओ चलें भीतर हम मन्दिर के और बन्द द्वारों को कर लें आओ, वैसा करें हम क्यों?

क्योंकि लोग हैं आ रहे मारने को तुझको। वे आ
रहे हैं आज रात मार डालने को तुझको।"
११ किन्तु मैंने शमायाह से कहा, "क्या मेरे जैसे
किसी व्यक्ति को भाग जाना चाहिए? तुम तो
जानते ही हो कि मेरे जैसे व्यक्ति को अपने पराण
बचाने के लिये मन्दिर में नहीं भाग जाना चाहिए।
सो मैं वहाँ नहीं जाऊँगा!"
१२ मैं जानता था कि शमायाह को परमेश्वर ने
नहीं भेजा है। मैं जानता था कि मेरे विरुद्ध वह
इस लिये ऐसी झूठी भविष्यवाणियाँ कर रहा है
कि तोबियाह और सम्बल्लत ने उसे वैसा करने के
लिए धन दिया है। १३ शमायाह को मुझे तंग करने
और डराने के लिये भाड़े पर रखा गया था। वे यह
चाहते थे कि डर कर छिपने के लिये मन्दिर में भाग
कर मैं पाप करूँ ताकि मेरे शत्रुओं के पास मुझे
लज्जित करने और बदनाम करने का कोई आधार
हो।
१४ हे परमेश्वर! तोबियाह और सम्बल्लत को
याद रख। उन बुरे कामों को याद रख जो उन्होंने
किये हैं। उस नबिया नोअद्याह तथा उन नबियों
को याद रख जो मुझे भयभीत करने का जतन करते
रहे हैं।

परकोटे पूरा हो गया

१५ इस प्रकार एलूल *नाम के महीने की
पच्चीसवीं तारीख को यरूशलेम का परकोटा
बनकर तैयार हो गया। परकोटा की दीवार को
बनकर पूरा होने में बावन दिन लगे। १६ फिर हमारे
सभी शत्रुओं ने सुना कि हमने परकोटे बनाकर
तैयार कर लिया है। हमारे आस—पास के सभी
देशों ने देखा कि निर्माण कार्य पूरा हो चुका है।
इससे उनकी हिम्मत टूट गयी क्योंकि वे जानते थे
कि हमने यह कार्य हमारे परमेश्वर की सहायता से
पूरा किया है।
१७ इसके अतिरिक्त उन दिनों जब वह दीवार
बन कर पूरी हो चुकी थी तो यहूदा के धनी
लोग तोबियाह को पत्र लिख—लिख कर पत्र
भेजने लगे, तोबियाह उनके पत्रों का उत्तर
दिया करता। १८ वे इन पत्रों को इसलिए भेजा
करते थे कि यहूदा के बहुत से लोगों ने उसके
प्रति वफादार बने रहने की कसम उठाई हुई
थी। इसका कारण यह था कि वह आरह के पुत्र
शकन्याह का दामाद था तथा तोबियाह के पुत्र
यहोहानान ने मशुल्लाम की पुत्री से विवाह किया
था। मशुल्लाम बेरेक्याह का पुत्र था, १९ तथा
अतीतकाल में उन लोगों ने तोबियाह को एक
विशेष वचन भी दे रखा था। सो वे लोग मुझसे
कहते रहते थे कि तोबियाह कितना अच्छा है और
उधर वे, जो काम मैं किया करता था, उनके बारे में
तोबियाह को सूचना देते रहते थे। तोबियाह मुझे
डराने के लिये पत्र भेजता रहता था।

७ १ इस प्रकार हमने दीवार बनाने का काम पूरा
किया। फिर हमने द्वार पर दरवाज़े लगाये।
फिर हमने उस द्वार के पहरेदारों, मन्दिर के गायकों
तथा लेवियों को चुना जो मन्दिर में गीत गाते और
याजकों की मदद करते थे। २ इसके बाद मैंने अपने
भाई हनानी को यरूशलेम का हाकिम नियुक्त कर
दिया। मैंने हनन्याह नाम के एक और व्यक्ति
को चुना और उसे किलेदार नियुक्त कर दिया।
मैंने हनानी को इसलिए चुना था कि वह बहुत
ईमानदार व्यक्ति था तथा वह परमेश्वर से आम
लोगों से कहीं अधिक डरता था। ३ तब मैंने हनानी
और हनन्याह से कहा, "तुम्हें हर दिन यरूशलेम
का द्वार खोलने से पहले घंटों सूर्य चढ़ जाने के बाद
तक इंतजार करते रहना चाहिए और सूर्य छुपने
से पहले ही तुम्हें दरवाजे बन्द करके उन पर ताला
लगा देना चाहिए। यरूशलेम में रहने वाले लोगों
में से तुम्हें कुछ और लोग चुनने चाहिए और उन्हें
नगर की रक्षा करने के लिए विशेष स्थानों पर
नियुक्त करो तथा कुछ लोगों को उनके घरों के
पास ही पहरे पर लगा दो।"

लौटे हुए बन्दियों की सूची

४ अब देखो, वह एक बहुत बड़ा नगर था जहाँ
पर्याप्त स्थान था। किन्तु उसमें लोग बहुत कम थे
तथा मकान अभी तक फिर से नहीं बनाये गये थे।
५ इसलिए मेरे परमेश्वर ने मेरे मन में एक बात
पैदा की कि मैं सभी लोगों की एक सभा बुलाऊँ
सो मैंने सभी महत्वपूर्ण लोगों को, हाकिमों को
तथा सर्वसाधारण को एक साथ बुलाया। मैंने यह
काम इसलिए किया था कि मैं उन सभी परिवारों
की एक सूची तैयार कर सकूँ। मुझे ऐसे लोगों
की पारिवारिक सूचियाँ मिलीं जो दासता से सबसे
पहले छूटने वालों में से थे। वहाँ जो लिखा हुआ
मुझ मिला, वह इस प्रकार है।
६ ये इस क्षेत्र के वे लोग हैं जो दासत्व से
मुक्त होकर लौटे (बाबेल का राजा, नबूकदनेस्सर
इन लोगों को बन्दी बनाकर ले गया था। ये

*६ :१५ एलूल यह समय लगभग ४४३ ई.पूं. अगस्त—सितंबर है।

लोग यरूशलेम और यहूदा को लौटे। हर व्यक्ति
अपने—अपने नगर में चला गया। ७ ये लोग
जरुब्बाबेल, येशू, नहेम्याह, अजर्याह, राम्याह,
नहमानी, मोर्दकै, बिलशान, मिस्पेरेत, बिग्वै, नहूम
और बाना के साथ लौटे थे।) इस्राएल के लोगों
की सूची :
८ पॅरोश के वंशज: २, १७२
९ सपत्याह के वंशज: ३७२
१० आरह के वंशज: ६५२
११ पहत्मोआब के वंशज येशू और योआब के
परिवार की संतानें: २, ८१८
१२ एलाम के वंशज: १, २५४
१३ जत्तू के वंशज: ८४५
१४ जक्कै के वंशज: ७६०
१५ बिन्नूई के वंशज: ६४८
१६ बेबै के वंशज: ६२८
१७ अजगाद की संतानें: २, ३२२
१८ अदोनीकाम के वंशज: ६६७
१९ बिग्वै के वंशज: २, ०६७
२० आदीन के वंशज: ६५५
२१ आतेर के वंशज हिजीकयाह के परिवार से : ९८
२२ हाशम के वंशज: ३२८
२३ बेसै के वंशज: ३२४
२४ हारीप के वंशज: ११२
२५ गिबोन के वंशज: ९५
२६ बेतलेहेम और नतोपा नगरों के लोग: १८८
२७ अनातोत नगर के लोग: १२८
२८ बेतजमावत नगर के लोग: ४२
२९ किर्यत्यारीम, कपीर तथा बेरोत नगरों के लोग:
७४३
३० रामा और गेबा नगरों के लोग: ६२१
३१ मिकपास नगर के लोग: १२२
३२ बेतेल और ऐ नगर के लोग: १२३
३३ नबो नाम के दूसरे नगर के लोग: ५२
३४ एलाम नाम के दूसरे नगर के लोग: १, २५४
३५ हरीम नाम के नगर के लोग: ३२०
३६ यरीहो नगर के लोग: ३४५
३७ लोद, हादीद और ओनो नाम के नगरों के लोग:
७२१
३८ सना नाम के नगर के लोग: ३, ९३०
३९ याजकों की सूची :
यदायाह के वंशज येशू के परिवार से : ९७३
४० इम्मेर के वंशज: १, ०५२
४१ पशहूर के वंशज: १, २४७
४२ हारीम के वंशज: ११७
४३ लेवी परिवार समूह के लोगों की सूची :
येशू के वंशज कदमीएल के द्वारा होदवा के परिवार
से : ७४
४४ गायकों की सूची :
आसाप के वंशज: १४८
४५ द्वारपालों की सूची :
शल्लूम, आतेर, तल्मोन, अक्कूब, हतीता और
शोबै के वंशज: १३८
४६ मन्दिर के सेवकों की सूची :
सीहा, हसूपा और तब्बाओत की सन्तानें,
४७ केरोस, सीआ और पादोन की सन्तानें,
४८ लबाना, हगाबा और शल्मै के वंशज,
४९ हानान, गिद्देल, गहर के वंशज,
५० राया, रसीन और नकोदा की संतानें,
५१ गज्जाम, उज्जा और पासेह के वंशज,
५२ बेसै, मूनीम, नपूशस के वंशज,
५३ बकबूक, हकूपा हर्हूर के वंशज,
५४ बसलीत, महीदा और हर्षा के वंशज,
५५ बकर्स, सीसरा और तेमेह की संन्तानें,
५६ नसीह और हतीपा के वंशज,
५७ सुलैमान के सेवकों के वंशज:
सोतै, सोपेरेत और परीदा के वंशज.
५८ याला दकर्न और गिद्देल के वंशज,
५९ शपत्याह, हत्तील, पोकेरेत—सवायीम और
आमोन की संतानें,
६० मन्दिर के सभी सेवक और सुलैमान के सेवकों
के वंशज थे : ३९२
६१ यह उन लोगों की एक सूची है जो तेलमेलह,
तेलहर्षा, करुब अद्दोन तथा इम्मेर नाम के नगरों
से यरूशलेम आये थे। किन्तु ये लोग यह
प्रमाणित नहीं कर सके कि उनके परिवार वास्तव
में इस्राएल के लोगों से सम्बन्धित थे :
६२ दलायाह, तोबियाह और नेकोदा के वंशज थे :
६४२
६३ यह एक उनकी सूची है जो याजक थे। ये वे लोग
थे जो यह प्रमाणित नहीं कर सके थे कि उनके
पूर्वज वास्तव में इस्राएल के लोगों के वंशज थे।
होबायाह, हक्कोस और बर्जिल्लै के वंशज (बर्जिल्लै
वह व्यक्ति था जिस ने गिलाद निवासी बर्जिल्लै
की एक पुत्री से विवाह किया था। इसीलिए
उसे यह नाम दिया गया था।)
६४ जिन लोगों ने अपने परिवारों के ऐतिहासिक
दस्तावेजों को खोजा और वे उन्हें पा नहीं सके,
उनका नाम याजकों की इस सूची में नहीं जोड़ा जा
सका। वे शुद्ध नहीं थे सो याजक नहीं बन सकते थे।
६५ सो राज्यपाल ने उन्हें एक आदेश दिया जिसके
तहत वे किसी भी अति पवित्र भोजन को नहीं

खा सकते थे। उस भोजन में से वे उस समय तक कुछ भी नहीं खा सकते थे जब तक ऊरीम और तुम्मीम का उपयोग करने वाला महायाजक इस बारे में परमेश्वर की अनुमति न ले ले।
६६-६७ उस समूचे समूह में लोगों की संख्या ४२,
३६० थी और उनके पास ७, ३३७ दास और
दासियाँ थीं, उनके पास २४५ गायक और
गायिकाएँ थीं। ६८-६९ उनके पास ७३६ घोड़े थे,
२४५ खच्चर, ४३५ ऊँट तथा ६, ७२० गधे थे।
७० परिवार के कुछ मुखियाओं ने उस काम को बढ़ावा देने के लिए धन दिया था। राज्यपाल के द्वारा निर्माण—कोष में उन्नीस पौंड सोना दिया गया था। उसने याजकों के लिये पचास कटोरे और पाँच सौ तीस जोड़ी कपड़े भी दिये थे। ७१ परिवार के मुखियाओं ने तीन सौ पचहत्तर पौंड सोना उस काम को बढ़ावा देने के लिये निर्माण कोष में दिया और दो हजार दो सौ मीना चाँदी उनके द्वारा भी दी गयी। ७२ दूसरे लोगों ने कुल मिला कर बीस हजार दर्कमोन सोना उस काम को बढ़ावा देने के लिए निर्माण कोष को दिया। उन्होंने दो हजार मीना चाँदी और याजकों के लिए सढ़सठ जोड़े कपड़े भी दिये।

७३ इस प्रकार याजक लेवी परिवार समूह के लोग, गायक और मन्दिर के सेवक अपने—अपने नगरों में बस गये और इस्राएल के दूसरे लोग भी अपने—अपने नगरों में रहने लगे और फिर साल के सातवें महीने तक इस्राएल के सभी लोग अपने—अपने नगरों में बस गये।

एज्रा द्वारा व्यवस्था—विधान का पढ़ा जाना

८ १ फिर साल के सातवें महीने में इस्राएल के सभी लोग आपस में इकट्ठे हुए। वे सभी एक थे और इस प्रकार एकमत थे जैसे मानो वे कोई एक व्यक्ति हो। जलद्वार के सामने के खुले चौक में वे आपस में मिले। एज्रा नाम के शिक्षक से उन सभी लोगों ने मूसा की व्यवस्था के विधान की पुस्तक को लाने के लिये कहा। यह वही व्यवस्था का विधान है जिसे इस्राएल के लोगों को यहोवा ने दिया था। २ सो याजक एज्रा परस्पर इकट्ठे हुए। उन लोगों के सामने व्यवस्था के विधान की पुस्तक को ले आया। उस दिन महीने की पहली तारीख़ थी और वह महीना वर्ष का सातवाँ महीना था। उस सभा में पुरुष थे, स्त्रियाँ थीं, और वे सभी थे जो बातों को सुन और समझ सकते थे। ३ एज्रा ने भोर के तड़के से लेकर दोपहर तक ऊँची आवाज में इस व्यवस्था के विधान की पुस्तक से पाठ किया। उस समय एज्रा का मुख उस खुले चौक की तरफ था जो जल—द्वार के सामने पड़ता था। उसने सभी पुरुषों, स्त्रियों और उन सभी लोगों के लिये उसे पढ़ा जो सुन—समझ सकते थे। सभी लोगों ने व्यवस्था के विधान की पुस्तक को सावधानी के साथ सुना और उस पर ध्यान दिया।

४ एज्रा लकड़ी के उस ऊँचे मंच पर खड़ा था जिसे इस विशेष अवसर के लिये ही बनाया गया था। एज्रा के दाहिनी ओर मत्तित्याह, शेमा, अनायाह, ऊरिय्याह, हिल्कियाह और मासेयाह खड़े थे और एज्रा के बायीं ओर पदायाह, मीशाएल, मल्कियाह. हाशूम, हश्बद्दाना, जकर्याह और मशुल्लाम खड़े हुए थे।

५ फिर एज्रा ने उस पुस्तक को खोला। एज्रा सभी लोगों को दिखायी दे रहा था क्योंकि वह सब लोगों से ऊपर एक ऊँचे मंच पर खड़ा था। एज्रा ने व्यवस्था के विधान की पुस्तक को जैसे ही खोला, सभी लोग खड़े हो गये। ६ एज्रा ने महान परमेश्वर यहोवा की स्तुति की और सभी लोगों ने अपने हाथ ऊपर उठाते हुए एक स्वर में कहा, "आमीन! आमीन!" और फिर सभी लोगों ने अपने सिर नीचे झुका दिये और धरती पर दण्डवत करते हुए यहोवा की उपासना की।

७ लेवीवंश परिवार समूह के इन लोगों ने वहाँ खड़े हुए सभी लोगों को व्यवस्था के विधान की शिक्षा दी। लेवीवंश के उन लोगों के नाम थे: येशू, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदियाह, मासेयाह, कलिता, अजर्याह, योजबाद, हानान, और पलायाह। ८ लेवीवंश के इन लोगों ने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक का पाठ किया। उन्होंने उसकी ऐसी व्याख्या की कि लोग उसे समझ सकें। उसका अभिप्राय: क्या है, इसे खोल कर उन्होंने समझाया। उन्होंने यह इसलिए किया ताकि जो पढ़ा जा रहा है, लोग उसे समझ सकें।

९ इसके बाद राज्यपाल नहेम्याह याजक तथा शिक्षक एज्रा तथा लेवीवंश के लोग जो लोगों को शिक्षा दे रहे थे, बोले। उन्होंने कहा, "आज का दिन तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का विशेष दिन है दु:खी मत होओ, विलाप मत करो।" उन्होंने ऐसा इसलिये कहा था कि लोग व्यवस्था के विधान में परमेश्वर का सन्देश सुनते हुए रोने लगे थे।

१० नहेम्याह ने कहा, "जाओ, और जाकर उत्तम भोजन और शर्बत का आनन्द लो। और थोड़ा खाना और शर्बत उन लोगों को भी दो जो कोई खाना नहीं बनाते हैं। आज यहोवा का विशेष दिन

है। दु:खी मत रहो! क्यों? क्योंकि परमेश्वर का आनन्द तुम्हें सुदृढ़ बनायेगा।"

११ लेवीवंश परिवार के लोगों ने लोगों को शांत होने में मदद की। उन्होंने कहा, "चुप हो जाओ, शांत रहो, यह एक विशेष दिन है। दु:खी मत रहो।"

१२ इसके बाद सभी लोग उस विशेष भोजन को खाने के लिये चले गये। अपने खाने पीने की वस्तुओं, को उन्होंने आपस में बाँटा। वे बहुत प्रसन्न थे और इस तरह उन्होंने उस विशेष दिन को मनाया और आखिरकार उन्होंने यहोवा की उन शिक्षाओं को समझ लिया जिन्हें उनको समझाने का शिक्षक जतन किया करते थे।

१३ फिर महीने की दूसरी तारीख को सभी परिवारों के मुखिया, एज्रा, याजकों और लेवी वंशियो, से मिलने गये और व्यवस्था के विधान के वचनों को समझने के लिए सभी लोग शिक्षक एज्रा को घेर कर खड़े हो गये।

१४-१५ उन्होंने समझ कर यह पाया कि व्यवस्था के विधान में यह आदेश दिया गया है कि साल के सातवें महीने में इस्राएल के लोगों को एक विशेष पवित्र पर्व मनाने के लिये यरूशलेम जाना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे अस्थायी झोपड़ियाँ बनाकर वहाँ रहें। लोगों को यह आदेश यहोवा ने मूसा के द्वारा दिया था। लोगों से यह अपेक्षा की गयी थी कि वे इसकी घोषणा करें। लोगों को चाहिए था कि वे अपने नगरों और यरूशलेम से गुजरते हुए इन बातों की घोषणा करें: "पहाड़ी प्रदेश में जाओ और वहाँ से तरह तरह के जैतून के पेड़ों की टहनियाँ ले कर आओ। हिना (मेंहदी), खजूर और छायादार सघन वृक्षों की शाखाएँ लाओ, फिर उन टहनियों से अस्थायी आवास बनाओ। वैसा ही करो जैसा व्यवस्था का विधान बताता है।"

१६ सो लोग बाहर गये और उन—उन पेड़ों की टहनियाँ ले आये और फिर उन टहनियों से उन्होंने अपने लिये अस्थायी झोपड़ियाँ बना लीं। अपने घर की छतों पर और अपने—अपने आँगनों में उन्होंने झोपड़ियाँ डाल लीं। उन्होंने मन्दिर के आँगन जल—द्वार के निकट के खुले चौक और एप्रैम द्वार के निकट झोपड़ियाँ बना लीं। १७ इस्राएल के लोगों की उस समूची टोली ने जो बंधुआपन से छूट कर आयी थी, आवास बना लिये और वे अपनी बनाई झोंपड़ियों में रहने लगे। नून के पुत्र यहोशू के समय से लेकर उस दिन तक इस्राएल के लोगों ने झोंपड़ियों के त्यौहार को कभी इस तरह नहीं मनाया था। हर व्यक्ति आनन्द मग्न था!

१८ उस पर्व के हर दिन एज्रा उन लोगों के लिये व्यवस्था के विधान की पुस्तक में से पाठ करता रहा। उस पर्व के पहले दिन से अंतिम दिन तक एज्रा उन लोगों को व्यवस्था का विधान पढ़ कर सुनाता रहा। इस्राएल के लोगों ने सात दिनों तक उस पर्व को मनाया। फिर व्यवस्था के विधान के अनुसार आठवें दिन लोग एक विशेष सभा के लिए परस्पर एकत्र हुए।

इस्राएल के लोगों द्वारा अपने पापों का अंगीकार

९ १ फिर उसी महीने की चौबीसवीं तारीख को एक दिन के उपवास के लिये इस्राएल के लोग परस्पर एकत्र हुए। उन्होंने यह दिखने के लिये कि वे दु:खी और बेचैन हैं, उन्होंने शोक वस्त्र धारण किये, अपने अपने सिरों पर राख डाली। २ वे लोग जो सच्चे इस्राएली थे, उन्होंने बाहर के लोगों से अपने आपको अलग कर दिया। इस्राएली लोगों ने मन्दिर में खड़े होकर अपने और अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार किया। ३ वे लोग वहाँ लगभग तीन घण्टे खड़े रहे और उन्होंने अपने यहोवा परमेश्वर की व्यवस्था के विधान की पुस्तक का पाठ किया और फिर तीन घण्टे और अपने यहोवा परमेश्वर की उपासना करते हुए उन्होंने स्वयं को नीचे झुका लिया तथा अपने पापों को स्वीकार किया।

४ फिर लेवीवंशी येशू, बानी, कदमीएल, शबन्याह, बुन्नी, शेरेब्याह, बानी और कनानी सीढ़ियों पर खड़े हो गये और उन्होंने अपने परमेश्वर यहोवा को ऊँचे स्वर में पुकारा। ५ इसके बाद लेवीवंशी येशू, कदमीएल, बानी, हशबन्याह, शेरेब्याह, होदियाह, शबन्याह और पतहयाह ने फिर कहा। वे बोले: "खड़े हो जाओ और अपने यहोवा परमेश्वर की स्तुति करो!

"परमेश्वर सदा से जीवित था! और सदा ही
जीवित रहेगा!
लोगों को चाहिये कि स्तुति करें तेरे महिमावान
नाम की!
सभी आशीषों से और सारे गुण—गानों से नाम
ऊपर उठे तेरा!
६ तू तो परमेश्वर है! यहोवा,
बस तू ही परमेश्वर है!
आकाश को तूने बनाया है! सर्वोच्च आकाशों की
रचना की तूने,
और जो कुछ है उनमें सब तेरा बनाया है!

धरती की रचना की तूने ही,
और जो कुछ धरती पर है!
सागर को,
और जो कुछ है सागर में!
तूने बनाया है हर किसी वस्तु को जीवन तू देता है!
सितारे सारे आकाश के, झुकते हैं सामने तेरे और
उपासना करते हैं तेरी!
७ यहोवा परमेश्वर तू ही है,
अब्राम को तूने चुना था।
राह उसको तूने दिखाई थी,
बाबुल के उर से निकल जाने की तूने ही बदला था।
उसका नाम और उसे दिया नाम इब्राहीम का।
८ तूने यह देखा था कि वह सच्चा और निष्ठावान
था तेरे प्रति।
कर लिया तूने साथ उसके वाचा एक
उसे देने को धरती
कनान को वचन दिया तूने धरती, जो हुआ करती
थी हित्तियों की और एमोरीयों की।
धरती, जो हुआ करती थी परिज्जियों, यबूसियों
और गिर्गाशियों की!
किन्तु वचन दिया तूने उस धरती को देने का
इब्राहीम की संतानों को
और अपना वचन वह पूरा किया तूने क्यों? क्योंकि
तू उत्तम है।
९ यहोवा देखा था तड़पते हुए तूने हमारे पूर्वजों
को मिस्र में।
पुकारते सहायता को लाल सागर के तट पर तूने
उनको सुना था!
१० फ़िरौन को तूने दिखाये थे चमत्कार।
तूने हाकिमों को उसके और उसके लोगों को
दिखाये थे अद्भुत कर्म।
तुझको यह ज्ञान था कि सोचा करते थे
मिस्री कि वे उत्तम हैं हमारे पूर्वजों से।
किन्तु प्रमाणित कर दिया तूने कि तू कितना
महान है!
और है उसकी याद बनी हुई उनको आज तक भी!
११ सामने उनके लाल सागर को विभक्त किया था
तूने,
और वे पार हो गये थे सूखी धरती पर चलते हुए!
मिस्र के सैनिक पीछा कर रहे थे उनका। किन्तु
डुबा दिया तूने था शत्रु को सागर में।
और वे डूब गये सागर में जैसे डूब जाता है पानी
में पत्थर।
१२ मीनार जैसे बादल से दिन में उन्हें राह तूने
दिखाई
और अग्नि के खंभे का प्रयोग कर रात में उनको
तूने दिखाई राह।
मार्ग को तूने उनके इस प्रकार कर दिया
ज्योर्तिमय
और दिखा दिया उनको कि कहाँ उन्हें जाना है।
१३ फिर तू उतरा सीनै पहाड़ पर और आकाश से
तूने था उनको सम्बोधित किया।
उत्तम विधान दे दिया तूने
उन्हें सच्ची शिक्षा को था तूने दिया उनको।
व्यवस्था का विधान उन्हें तूने दिया और तूने दिया
आदेश उनको बहुत उत्तम!
१४ तूने बताया उन्हें सब्त यानी अपने विश्राम के
विशेष दिन के विषय में।
तूने अपने सेवक मूसा के द्वारा उनको आदेश दिये।
व्यवस्था का विधान दिया और दी शिक्षाएँ।
१५ जब उनको भूख लगी,
बरसा दिया भोजन था तूने आकाश से।
जब उन्हें प्यास लगी,
चट्टान से प्रकट किया तूने था जल को
और कहा तूने था उनसे 'आओ, ले लो इस प्रदेश
को।'
तूने वचन दिया उन को उठाकर हाथ यह प्रदेश
देने का उनको!
१६ किन्तु वे पूर्वज हमारे, हो गये अभिमानी : वे हो
गये हठी थे।
कर दिया उन्होंने मना आज्ञाएँ मानने से तेरी।
१७ कर दिया उन्होंने मना सुनने से।
वे भूले उन अचरज भरी बातों को जो तूने उनके
साथ की थीं।
वे हो गये जिद्दी! विद्रोह उन्होंने किया,
और बना लिया अपना एक नेता जो उन्हें लौटा
कर ले जाये।
फिर उनकी उसी दासता में किन्तु तू तो है दयावान
परमेश्वर!
तू है दयालु और करुणापूर्ण तू है।
धैर्यवान है तू
और प्रेम से भरा है तू!
इसलिये तूने था त्यागा नहीं उनको।
१८ चाहे उन्होंने बना लिया सोने का बछड़ा और
कहा,
'बछड़ा अब देव है तुम्हारा इसी ने निकाला था,
तुम्हें मिस्र से बाहर किन्तु उन्हें तूने त्यागा नहीं!'
१९ तू बहुत ही दयालु है!
इसलिये तूने उन्हें मरुस्थल में त्यागा नहीं।
दूर उनसे हटाया नहीं दिन में
तूने बादल के खम्भें को मार्ग

तू दिखाता रहा उनको।
और रात में तूने था दूर किया नहीं
उनसे अग्नि के पुंज को!
प्रकाशित तू करता रहा रास्ते को उनके।
और तू दिखाता रहा कहाँ उन्हें जाना है!
२० निज उत्तम चेतना, तूने दी उनको ताकि तू
विवेकी बनाये उन्हें।
खाने को देता रहा, तू उनको मन्ना
और प्यास को उनकी तू देता रहा पानी!
२१ तूने रखा उनका ध्यान चालीस बरसों तक
मरुस्थल में।
उन्हें मिली हर वस्तु जिसकी उनको दरकार थी।
वस्त्र उनके फटे तक नहीं पैरों में
उनके कभी नहीं आई सूजन कभी किसी पीड़ा में।
२२ यहोवा तूने दिये उनको राज्य, और उनको दी
जातियाँ
और दूर—सुदूर के स्थान थे उनको दिये जहाँ बसते
थे
कुछ ही लोग धरती उन्हें मिल गयी सीहोन की
सीहोन जो हशबोन का राजा था
धरती उन्हें मिल गयी ओग की आगे जो बाशान
का राजा था।
२३ वंशज दिये तूने अनन्त उन्हें जितने अम्बर में
तारे हैं।
ले आया उनको तू उस धरती पर।
जिसके लिये उन के पूर्वजों को
तूने आदेश दिया था कि वे वहाँ जाएँ
और अधिकार करें उस पर।
२४ धरती वह उन वंशजों ने ले ली।
वहाँ रह रहे कनानियों को उन्होंने हरा दिया।
पराजित कराया तूने उनसे उन लोगों को।
साथ उन प्रदेशों के और उन लोगों के वे जैसा
चाहें
वैसा करें ऐसा था तूने करा दिया।
२५ शक्तिशाली नगरों को उन्होंने हरा दिया।
कब्जा किया उपजाऊ धरती पर उन्होंने।
उत्तम वस्तुओं से भरे हुए ले लिए उन्होंने घर;
खुदे हुए कुँओं को ले लिया उन्होंने।
ले लिए उन्होंने थे बगीचे अँगूर के।
जैतून के पेड़ और फलों के पेड़ भर पेट खाया वे
करते थे सो वे हो गये मोटे।
तेरी दी सभी अद्भुत वस्तुओं का आनन्द वे लेते
थे।
२६ और फिर उन्होंने मुँह फेर लिया तुझसे था।
तेरी शिक्षाओं को उन्होंने फेंक दिया
दूर तेरे नबियों को मार डाला उन्होंने था।
ऐसे नबियों को जो सचेत करते थे लोगों को।
जो जतन करते लोगों को मोड़ने का तेरी ओर।
किन्तु हमारे पूर्वजों ने भयानक कार्य किये तेरे
साथ।
२७ सो तूने उन्हें पड़ने दिया उनके शत्रुओं के
हाथों में।
शत्रु ने बहुतेरे कष्ट दिये उनको
जब उन पर विपदा पड़ी हमारे पूर्वजों ने थी दुहाई
दी तेरी।
और स्वर्ग में तूने था सुन लिया उनको।
तू बहुत ही दयालु है भेज दिया
तूने था लोगों को उनकी रक्षा के लिये।
और उन लोगों ने छुड़ा कर बचा लिया उनको
शत्रुओं से उनके।
२८ किन्तु, जैसे ही चैन उन्हें मिलता था,
वैसे ही वे बुरे काम करने लग जाते बार बार।
सो शत्रुओं के हाथों उन्हें सौंप दिया तूने ताकि वे
करें उन पर राज।
फिर तेरी दुहाई उन्होंने दी
और स्वर्ग में तूने सुनी उनकी और सहायता उनकी
की।
तू कितना दयालु है!
होता रहा ऐसा ही अनेकों बार!
२९ तूने चेताया उन्हें।
फिर से लौट आने को तेरे विधान में
किन्तु वे थे बहुत अभिमानी।
उन्होंने नकार दिया तेरे आदेश को।
यदि चलता है कोई व्यक्ति नियमों पर
तेरे तो सचमुच जीएगा
वह किन्तु हमारे पूर्वजों ने तो तोड़ा था तेरे नियमों
को।
वे थे हठीले!
मुख फेर, पीठ दी थी उन्होंने तुझे!
तेरी सुनने से ही उन्होंने था मना किया।
३० "तू था बहुत सहनशील, साथ हमारे पूर्वजों के,
तूने उन्हें करने दिया बर्ताव बुरा अपने साथ बरसों
तक।
सजग किया तूने उन्हें अपनी आत्मा से।
उनको देने चेतावनी भेजा था नबियों को तूने।
किन्तु हमारे पूर्वजों ने तो उनकी सुनी ही नहीं।
इसलिए तूने था दूसरे देशों के लोगों को सौंप दिया
उनको।
३१ "किन्तु तू कितना दयालु है!
तूने किया था नहीं पूरी तरह नष्ट उन्हें।
तूने तजा नहीं उनको था। हे परमेश्वर!
तू ऐसा दयालु और करुणापूर्ण ऐसा है!

३२ परमेश्वर हमारा है, महान परमेश्वर!
तू एक वीर है ऐसा जिससे भय लगता है
और शक्तिशाली है जो निर्भर करने योग्य तू है।
पालता है तू निज वचन को!
यातनाएँ बहुत तेरी भोग हम चुके हैं।
और दु:ख हमारे हैं, महत्वपूर्ण तेरे लिये।
साथ में हमारे राजाओं के और मुखियाओं के घटी
थीं बातें बुरी।
याजकों के साथ में हमारे
और साथ में नबियों के और हमारे सभी लोगों के
साथ घटी थीं बातें बुरी।
अश्शूर के राजा से लेकर आज तक
वे घटी थीं बातें भयानक!
३३ किन्तु हे परमेश्वर! जो कुछ भी घटना है
साथ हमारे घटी उसके प्रति न्यायपूर्ण तू रहा।
तू तो अच्छा ही रहा,
बुरे तो हम रहे।
३४ हमारे राजाओं ने मुखियाओं, याजकों ने और
पूर्वजों ने नहीं पाला तेरी शिक्षाओं को!
उन्होंने नहीं दिया कान तेरे आदेशों।
तेरी चेतावनियाँ उन्होंने सुनी ही नहीं।
३५ यहाँ तक कि जब पूर्वज हमारे अपने राज्य में
रहते थे, उन्होंने नहीं सेवा की तेरी!
छोड़ा उन्होंने नहीं बुरे कर्मों का करना।
जो कुछ भी उत्तम वस्तु उनको तूने दी थी, उनका
रस वे रहे लेते।
आनन्द उस धरती का लेते रहे जो थी सम्पन्न
बहुत। और स्थान बहुत सा था उनके पास!
किन्तु उन्होंने नहीं छोड़ी निज बुरी राह।
३६ और अब हम बने दास हैं:
हम दास हैं उस धरती पर,
जिसको दिया तूने था हमारे पूर्वजों को।
तूने यह धरती थी उनको दी, कि भोगें वे उसका
फल
और आनन्द लें उन सभी चीज़ों का जो यहाँ उगती
हैं।
३७ इस धरती की फसल है भरपूर
किन्तु पाप किये हमने सो हमारी उपज जाती है
पास उन राजाओं के जिनको तूने बिठाया है
सिर पर हमारे।
हम पर और पशुओं पर हमारे वे राजा राज करते हैं
वे चाहते हैं
जैसा भी वैसा ही करते हैं।
हम हैं बहुत कष्ट में।
३८ "सो सोचकर इन सभी बातों के बारे में
हम करते हैं वाचा एक: जो न बदला जायेगा कभी
भी।
और इस वाचा की लिखतम हम लिखते हैं और इस
वाचा पर अंकित करते हैं
अपना नाम हाकिम हमारे, लेवी के वंशज और वे
करते हैं
हस्ताक्षर लगा कर के उस पर मुहर।"

१० १ मुहर लगी वाचा पर निम्न लिखित नाम
लिखे थे :
हकल्याह का पुत्र राज्यपाल नहेम्याह।
सिदकिय्याह, २ सरायाह, अजर्याह, यिर्मयाह,
३ पशहूर, अमर्याह, मल्कियाह, ४ हत्तूश,
शबन्याह, मल्लूक, ५ हारीम, मरेमोत,
ओबद्याह, ६ दानिय्येल, गिन्नतोन, बारुक,
७ मशूल्लाम, अबिय्याह, मिय्यामीन,
८ माज्याह, बिलगै और शमायाह। ये उन
याजकों के नाम हैं जिन्हेंने मुहर लगी वाचा पर
अपने नाम अंकित किये।
९ ये उन लेवीवंशियों के नाम हैं जिन्होंने मुहर
लगी वाचा पर अपने नाम अंकित किये :
आजन्याह का पुत्र येशू, हेनादाद का वंशज
बिन्नई और कदमिएल १० और उनके भाइयों
के नाम ये थे : शबन्याह, होदियाह, कलीता,
पलायाह, हानान, ११ मीका, रहोब, हशब्याह,
१२ जक्कर, शेरेब्याह, शकन्याह, १३ होदियाह,
बानी और बनीन।
१४ ये नाम उन मुखियाओं के हैं जिन्होंने उस
मुहर लगी वाचा पर अपने नाम अंकित किये :
परोश, पहत—मोआब, एलाम, जत्तू बानी,
१५ बुन्नी, अजगाद, बेबै, १६ अदोनिय्याह,
बिग्वै, आदीन, १७ आतेर, हिजकिय्याह,
अज्जूर, १८ होदियाह, हाशूम, बैसै, १९ हारीफ़,
अनातोत, नोबै, २० मगपिआश, मशूल्लम,
हेजीर, २१ मेशजबेल, सादोक, यददू,
२२ पलत्याह, हानान, अनायाह, २३ होशे,
हनन्याह, हश्शूब, २४ हल्लोहेश, पिलहा,
शोबेक, २५ रहूम, हशब्ना, माशेयाह,
२६ अहियाह, हानान, आनान. २७ मल्लूक,
हारीम, और बाना।
२८-२९ सो अब ये सभी लोग जिनके नाम ऊपर
दिये गये हैं परमेश्वर के सामने यह विशेष प्रतिज्ञा
लेते हैं। यदि ये अपने वचन का पालन न करें
तो उन के साथ बुरी बातें घटें! ये सभी लोग
परमेश्वर के विधान का पालन करने की प्रतिज्ञा
लेते हैं। परमेश्वर का यह विधान हमें परमेश्वर
के सेवक मूसा द्वारा दिया गया था। ये सभी

लोग सभी आदेशों, सभी नियमों और हमारे यहोवा परमेश्वर के उपदेशों का सावधानीपूर्वक पालन करने की प्रतिज्ञा लेते हैं। बाकी ये लोग भी प्रतिज्ञा लेते हैं: याजक लेवीवंशी, द्वारपाल, गायक, यहोवा के भवन के सेवक, तथा वे सभी लोग जिन्होंने आस—पास रहने वाले लोगों से, परमेश्वर के नियमों का पालन करने के लिए, अपने आपको अलग कर लिया था. उन लोगों की पत्नियाँ, पुत्र—पुत्रियाँ और हर वह व्यक्ति जो सुन समझ सकता था, अपने भाई बंधुओं, अपने मुखिया के साथ इस प्रतिज्ञा को अपनाने में सम्मिलित होते हैं कि परमेश्वर के सेवक मूसा के द्वारा दिये गये विधान का वे पालन करेंगे। यदि न करें तो उन पर विपत्तियाँ पड़े। वे सावधानी के साथ अपने स्वामी परमेश्वर के आदेशों, अध्यादेशों और निर्णयों का पालन करेंगे।

३० "हम प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने आस—पास रहने वाले लोगों के साथ अपनी पुत्रियों का ब्याह नहीं करेंगे और हम यह प्रतिज्ञा भी करते हैं कि उनकी लड़कियों के साथ अपने लड़कों को नहीं ब्याहेंगे।

३१ "हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सब्त के दिन काम नहीं करेंगे और यदि हमारे आस—पास रहने वाले लोग सब्त के दिन बेचने को अनाज या दूसरी वस्तुएँ लायेंगे तो विश्राम के उस विशेष दिन या किसी भी अन्य विशेष के दिन, उन वस्तुओं को नहीं खरीदेंगे। हर सातवें बरस हम न तो अपनी धरती को जोतेंगे और न बोएंगे, तथा हर सातवें वर्ष चक्र में हम दूसरे लोगों को दिये गये हर कर्ज को माफ़ कर देंगे।

३२ "परमेश्वर के भवन का ध्यान रखने के लिये उसके आदेशों पर चलने के उत्तरदायित्व को हम ग्रहण करेंगे। हम हर साल एक तिहाई शेकेल हमारे परमेश्वर के सम्मान में भवन की सेवा, उपासना को बढ़ावा देने के लिये दिया करेंगे। ३३ इस धन से उस विशेष रोटी का खर्च चला करेगा जिसे याजक मन्दिर की वेदी पर अर्पित करता है। इस धन से ही अन्नबलि और होमबलि का खर्च उठाया जायेगा। सब्त नये चाँद के त्यौहार तथा दूसरी सभाओं पर इसी धन से खर्चा होगा। उन पवित्र चढ़ावों और पापबलियों पर खर्च भी इस धन से ही किया जायेगा जिनसे इस्राएल के लोग शुद्ध बनते हैं। इस धन से ही हर उस काम का खर्च चलेगा जो हमारे परमेश्वर के मन्दिर के लिए आवश्यक है।

३४ "हम यानी याजक, लेवीवंशी तथा लोगों ने मिल कर यह निश्चित करने के लिए पासे फेंके कि हमारे प्रत्येक परिवार को हर वर्ष एक निश्चित समय हमारे परमेश्वर के मन्दिर में लकड़ी का उपहार कब लाना है। वह लकड़ी जिसे हमारे परमेश्वर यहोवा की वेदी पर जलाया जाता है। हमें इस काम को अवश्य करना चाहिये क्योंकि यह हमारी व्यवस्था के विधान में लिखा है।

३५ "हम अपने फलों के हर पेड़ और अपनी फसल के पहले फलों को लाने का उत्तरदायित्व भी ग्रहण करते हैं। हर वर्ष यहोवा के मन्दिर में हम उस फल को लाकर अर्पित किया करेंगे।

३६ "क्योंकि व्यवस्था के विधान में यह भी लिखा है इसलिए हम इसे भी किया करेंगे : हम अपने पहलौठे पुत्र, पहलौठे गाय के बच्चे, भेड़ों और बकरियों के पहले छौनो को लेकर परमेश्वर के मन्दिर में आया करेंगे। उन याजकों के पास हम इन सब को ले जाया करेंगे जो वहाँ मन्दिर में सेवा आराधना करते हैं।

३७ "हम परमेश्वर के मन्दिर के भण्डार में याजकों के पास ये वस्तुएँ भी लाया करेंगे : पहला पिसा खाना, पहली अन्न— बलियाँ, हमारे सभी पेड़ों के पहले फल, हमारी नयी दाखमधु और तेल का पहला भाग। हम लेवीवंशियों के लिये अपनी उपज का दसवाँ हिस्सा भी दिया करेंगे क्योंकि प्रत्येक नगर में जहाँ हम काम करते हैं, लेवीवंशी हमसे ये वस्तुएँ लिया करते हैं। ३८ लेवीवंशी जब उपज का यह भाग एकत्र करें तो हारुन के परिवार का एक याजक उनके साथ अवश्य होना चाहिये, और फिर इन सब वस्तुओं के दसवें हिस्से को वहाँ से लेकर लेवीवंशियों को चाहिये कि वे उन्हें हमारे परमेश्वर के मन्दिर मे ले आयें और उन्हें मन्दिर के खजाने की कोठियारों में रख दें। ३९ इस्राएल के लोगों और लेवीवंशियों को चाहिये कि वे अपने उपहारों को कोठियारों में ले आयें। उपहार के अन्न, नयी दाखमधु और तेल को उन्हें वहाँ ले आना चाहिये। मन्दिर में काम आने वाली सभी वस्तुएँ उन कोठियारों में रखी जाती हैं और अपने कार्य पर नियुक्त याजक, गायक और द्वारपालों के कमरे भी वहीं थे।

"हम सभी प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपने परमेश्वर के मन्दिर की देख—रेख किया करेंगे!"

यरूशेलम में नये लोगों का प्रवेश

११ १ देखो अब इस्राएल के लोगों के मुखिया यरूशलेम में बस गए। इस्राएल के दूसरे

लोगों को यह निश्चित करना था कि नगर में
और कौन लोग बसेंगे। इसलिए उन्होंने पासे फेंके
जिसके अनुसार हर दस व्यक्तियों में से एक को
यरूशलेम के पवित्र नगर में रहना था और दूसरे
नौ व्यक्तियों को अपने—अपने मूल नगरों में
बसना था। २ यरूशलेम में रहने के लिए कुछ
लोगों ने स्वयं अपने आप को प्रस्तुत किया।
अपने आप को स्वयं प्रस्तुत करने के लिए दूसरे
व्यक्तियों ने उन्हें धन्यवाद देते हुए आशीर्वाद
दिये।

३ ये प्रांतों के वे मुखिया हैं जो यरूशलेम में
बस गये। (कुछ इस्राएल के निवासी कुछ याजक
लेवीवंशी मन्दिर के सेवक और सुलैमान के उन
सेवकों के वंशज अलग—अलग नगरों में अपनी
निजी धरती पर यहूदा में रहा करते थे, ४ तथा
यहूदा और बिन्यामीन परिवारों के दूसरे लोग
यरूशलेम में ही रह रहे थे।)

यहूदा के वे वंशज जो यरूशलेम में बस गये थे, वे
ये हैं:

उज्जियाह का पुत्र अतायाह (उज्जियाह
जकर्याह का पुत्र था, जकर्याह अमर्याह का
पुत्र था, और अमर्याह, शपत्याह का पुत्र
था। शपत्याह महललेल का पुत्र था और
महललेल पेरेस का वंशज था) ५ मासेयाह
बारुक का पुत्र था (और बारुक कोल—होजे
का पुत्र था। कोल होजे हजायाह का पुत्र
था। हजायाह योयारीब के पुत्र अदायाह का
पुत्र था। योयारीब का पिता जकर्याह था जो
शिलोई का वंशज था) ६ पेरेस के जो वंशज
यरूशलेम में रह रहे थे, उनकी संख्या थी चार
सौ अड़सठ। वे सभी लोग शूरवीर थे।

७ बिन्यामीन के जो वंशज यरूशलेम में आये वे
ये थे :

सल्लू जो योएद के पुत्र मशूल्लाम का पुत्र
था (मशूल्लाम योएद का पुत्र था। योएद
पदायाह का पुत्र था और पदायाह कोलायाह
का पुत्र था। कोलायाह इतीएह के पुत्र
मासेयाह का पुत्र था और इतीएह का पिता
यशायाह था) ८ जिन लोगों ने यशायाह का
अनुसारण किया वे थे गब्बै और सल्लै। इनके
साथ नौ सौ अट्ठाईस पुरुष थे। ९ जिक्री का
पुत्र योएल इनका प्रधान था और हस्सनूआ
का पुत्र यहूदा यरूशलेम नगर का उपप्रधान
था।

१० यरूशलेम में जो याजक बस गए, वे हैं:
योयारीब का पुत्र यदायाह और याकीन,
११ तथा सरायाह जो हिलकियाह का पुत्र
था। (हिल्कियाह सादोक के पुत्र मशुल्लाम
का पुत्र था और सादोक अहीतूब के पुत्र
मरायोत का पुत्र) अहीतूब परमेश्वर के
भवन की देखभाल करने वाला था। १२ उनके
भाईयों के आठ सौ बाइस पुरुष, जो भवन
के लिये काम किया करते थे। तथा यरोहाम
का पुत्र अदायाह। (यरोहाम, जो अस्सी के
पुत्र पलल्याह का पुत्र था। अस्सी के पिता
का नाम जकर्याह और दादा का नाम पशहूर
था। पशहूर जो मल्कियाह का पुत्र था)
१३ अदायाह और उसके साथियों की संख्या
दो सौ बयालीस थी। ये लोग अपने—अपने
परिवारों के मुखिया थे। अमशै जो अज़रेल का
पुत्र था। (अज़रेल अहजै का पुत्र था। अहजै
का पिता मशिल्लेमोत था। जो इम्मेर का पुत्र
था), १४ अमशै और उसके साथी वीर योद्धा थे।
वे संख्या में एक सौ चौबीस थे। (हग्गदोलीन
का पुत्र जब्दिएल उनका अधिकारी हुआ
करता था।)

१५ ये वे लेवीवंशी हैं, जो यरूशलेम में जा बसे
थे :

शमायाह जो हश्शूब का पुत्र था (हश्शूब
अज्रीकाम का पुत्र और हुशब्याह का पोता
था। हुशब्याह बुन्नी का पुत्र था)। १६ शब्बत
और योजाबाद (ये दो व्यक्ति लेवीवंशियों के
मुखिया थे। परमेश्वर के भवन के बाहरी कामों
के ये अधिकारी थे)। १७ मत्तन्याह, (मत्तन्याह
मीका का पुत्र था और मीका जब्दी का, तथा
जब्दी आसाप का।) आसाप गायक मण्डली
का निर्देशक था। आसाप स्तुति गीत और
प्रार्थनाओं के गायन में लोगों की अगुवाई
किया करता था बकबुकियाह (बकबुकियाह
अपने भाइयों के ऊपर दूसरे दर्जे का अधिकारी
था)। और शम्मू का पुत्र अब्दा (शम्मू यदूतन
का पोता और गालाल का पुत्र था)। १८ इस
प्रकार दो सौ चौरासी लेवीवंशी यरूशलेम के
पवित्र नगर में जा बसे थे।

१९ जो द्वारपाल यरूशलेम चले गये थे, उनके
नाम ये थे :

अक्कूब, तलमोन, और उनके साथी। ये लोग
नगर—द्वारों पर नजर रखते हुए उनकी
रखवाली किया करते थे। ये संख्या में एक सौ
बहत्तर थे।

२० इस्राएल के दूसरे लोग, अन्य याजक और
लेवीवंशी यहूदा के सभी नगरों में रहने लगे। हर
कोई व्यक्ति उस धरती पर रहा करता था जो उनके
पूर्वजों की थी। २१ मन्दिर में सेवा आराधना करने
वाले लोग ओपेल की पहाड़ी पर बस गये। सीहा
और गिश्पा मन्दिर के उन सेवकों के मुखिया थे।
२२ यरूशलेम में लेवीवंशियों के ऊपर उज्जी को
अधिकारी बनाया गया। उज्जी बानी का पुत्र था।
(बानी, मीका का पड़पोता, मत्तन्याह का पोता,
और हशब्याह का पुत्र था)। उज्जी आसाप का
वंशज था। आसाप के वंशज वे गायक थे जिन पर
परमेश्वर के मन्दिर की सेवा का भार था। २३ ये
गायक राजा की आज्ञाओं का पालन किया करते
थे। राजा की आज्ञाएँ इन गायकों को बताती थीं
कि प्रतिदिन क्या करना है। २४ वह व्यक्ति जो
राजा को लोगों से सम्बन्धित मामलों में सलाह
दिया करता था वह था पतहियाह (पतहियाह
जेरह के वंशज मशेजबेल का पुत्र था और जेरह
यहूदा का पुत्र था।)
२५ यहूदा के लोग इन कस्बों में बस गये:
किर्यतबा और उसके आस—पास के छोटे—छोटे
गाँव, दिबोन और उसके आसपास के छोटे—छोटे
गाँव, यकब्सेल और उसके आसपास के छोटे—
छोटे गाँव, २६ तथा येशू, मोलादा, बेतपेलेत,
२७ हसर्यूआल बेरशेबा तथा उस के आसपास के
छोटे—छोटे गाँव २८ और सिकलग, मकोना और
उसके आसपास के छोटे गाँव। २९ एन्निम्मोन.
सोरा, यर्मूत, ३० जानोह और अदुल्लाम तथा उसके
आसपास के छोटे छोटे गाँव। लाकीश और उसके
आसपास के खेतों, अजेका और उसके आसपास के
छोटे—छोटे गाँव। इस प्रकार बरशेबा से लेकर
हिन्नोम की तराई तक के इलाके में यहूदा के लोग
रहने लगे।
३१ जिन स्थानों में बिन्यामीन के वंशज रहने
लगे थे, वे ये थे: गेबा मिकमश, अय्या, बेतेल,
ओर उसके आस—पास के छोटे—छोटे गाँव,
३२ अनातोत, नोब, अनन्याह ३३ हासोर रामा,
गित्तैम, ३४ हादीद, सबोईम, नबल्लत, ३५ लोद,
ओनो तथा कारीगरों की तराई। ३६ लेवीवंशियों के
कुछ समुदाय जो यहूदा में रहा करते थे बिन्यामीन
की धरती पर बस गये थे।

याजक और लेवीवंशी

१२ १ जो याजक और लेवीवंशी यहूदा की
धरती पर लौट कर वापस आये थे, वे ये
थे। वे शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल तथा येशू
के साथ लौटे थे, उनके नामों की सूची यह है:
सरायाह, यिर्मयाह, एज्रा,
२ अमर्याह, मल्लूक, हत्तूश,
३ शकन्याह, रहूम, मरेमोत,
४ इद्दो, गिन्तोई, अबियाह,
५ मिय्यामीन, माद्याह, बिल्गा,
६ शमायाह, योआरीब, यदायाह,
७ सल्लू, आमोक, हिल्कियाह और यदायाह।
ये लोग याजकों और उनके सम्बन्धियों के मुखिया
थे। येशू के दिनों में ये ही उनके मुखिया हुआ करते
थे।
८ लेवीवंशी लोग ये थे: येशू बिन्नुई, कदमिएल,
शेरेब्याह, यहूदा और मत्तन्याह भी। मत्तन्याह
के सम्बन्धियों समेत ये लोग परमेश्वर के स्तुति
गीतों के अधिकारी थे। ९ बकबुकियाह और उन्नो,
इन लेवीवंशियों के सम्बन्धी थे। ये दोनों सेवा
आराधना के अवसरों पर उनके सामने खड़े रहा
करते थे। १० येशू योयाकीम का पिता था और
योयाकीम एल्याशीब का पिता था और एल्याशीब
के योयादा नाम का पुत्र पैदा हुआ। ११ फिर
योयादा से योनातान और योनातान से यहूदा पैदा
हुआ।
१२ योयाकीम के दिनों में ये पुरुष याजकों के
परिवारों के मुखिया हुआ करते थे:
शरायाह के घराने का मुखिया मरायाह था।
यिर्मयाह के घराने का मुखिया हनन्याह था।
१३ मश्शूलाम एज्रा के घराने का मुखिया था।
अर्मयाह के घराने का मुखिया था यहोहानान।
१४ योनातान मल्लूक के घराने का मुखिया था।
योसेप शबन्याह के घराने का मुखिया था।
१५ अदना हारीम के घराने का मुखिया था।
हेलैक मेरेमोत के घराने का मुखिया था।
१६ जकर्याह इद्दो के घराने का मुखिया था।
मशुल्लाम गिन्नतोन के घराने का मुखिया था।
१७ जिक्री अबियाह के घराने का मुखिया था।
पिलतै मिन्यामीन और मोअद्याह के घराने का
मुखिया था।
१८ शम्मू बिल्गा के घराने का मुखिया था।
यहोनातान शामायह के घराने का मुखिया था।
१९ मतैन योयारीब के घराने का मुखिया था।
उज्जी, यदायाह के घराने का मुखिया था।
२० कल्लै सल्लै के घराने का मुखिया था।
एबेर आमोक के घराने का मुखिया था।
२१ हशब्याह हिल्कियाह के घराने का मुखिया था।
और नतनेल यदायाह के घराने का मुखिया था।

२२ फारस के राजा दारा के शासन काल में
लेवी परिवारों के मुखियाओं और याजक घरानों के
मुखियाओं के नाम एल्याशीब, योयादा, योहानान
तथा यहूदा के दिनों में लिखे गये। २३ लेवी परिवार
के वंशजों के बीच जो परिवार के मुखिया थे, उनके
नाम एल्याशीब के पुत्र योहानाम तक इतिहास
की पुस्तक में लिखे गये।
२४ लेवियों के मुखियाओं के नाम ये थे:
हशब्याह, शेरेब्याह, कदमिएल का पुत्र येशू
उसके साथी। उनके भाई परमेश्वर को आदर देने
के लिए स्तुतिगान के वास्ते उनके सामने खड़ा रहा
करते थे। वे आमने—सामने इस तरह खड़े होते थे
कि एक गायक समूह दूसरे गायक समूह के उत्तर में
गीत गाता था। परमेश्वर के भक्त दाऊद की ऐसी
ही आज्ञा थी।
२५ जो द्वारपाल द्वारों के पास के कोठियारों पर
पहरा देते थे, वे ये थे: मत्तन्याह. बकबुकियाह,
ओबाद्याह, मशुल्लाम, तलमोन और अक्कूब।
२६ ये द्वारपाल योयाकीम के दिनों में सेवा कार्य
किया करते थे। योयाकीम योसादाक के पुत्र येशू
का पुत्र था। इन द्वारपालों ने ही राज्यपाल
नहेम्याह और याजक और विद्वान एज्रा के दिनों
में सेवा कार्य किया था।

यरूशलेम के परकोटे का समर्पित किया जाना

२७ लोगों ने यरूशलेम की दीवार का समर्पण
किया। उन्होंने सभी लेवियों को यरूशलेम में
बुलाया। सो लेवी जिस किसी नगर में भी रह रहे
थे, वहाँ से वे आये। यरूशलेम की दीवार के समर्पण
को मनाने के लिए वे यरूशलेम आये। परमेश्वर
को धन्यवाद देने और स्तुतिगीत गाने के लिए
लेवीवंशी वहाँ आये। उन्होंने अपनी झाँझ, सारंगी
और वीणाएँ बजाईं।
२८–२९ इसके अतिरिक्त जितने भी और गायक
थे, वे भी यरूशलेम आये। वे गायक यरूशलेम
के आसपास के नगरों से आये थे। वे नतोपातियों
के गावों से, बेत—गिलगाल से, गेबा से और
अजमाबेत के नगरों से आये थे। गायकों ने
यरूशलेम के इर्द—गिर्द अपने लिए छोटी—
छोटी बस्तियाँ बना रखी थीं।
३० इस प्रकार याजकों और लेवियों ने एक
समारोह के द्वारा अपने अपने को शुद्ध किया। फिर
एक समारोह के द्वारा उन्होंने लोगों, द्वारों और
यरूशलेम के परकोटे को भी शुद्ध किया।
३१ फिर मैंने यहूदा के मुखियाओं से कहा कि वे
ऊपर जा कर परकोटे के शिखर पर खड़े हो जायें।
मैंने परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिये दो बड़ी
गायक—मण्डलियों का चुनाव भी किया। इनमें
से एक गायक मण्डली को कुरडी—द्वार की ओर
दाहिनी तरफ परकोटे के शिखर पर जाना आरम्भ
किया। ३२ होशायाह, और यहूदा के आधे मुखिया
उन गायकों के पीछे हो लिये। ३३ अजर्याह, एज्रा,
मशुल्लाम, ३४ यहूदा, बिन्यामीन, शमायाह, और
यिर्मयाह भी उनके पीछे हो लिये थे। ३५ तुरही
लिये कुछ याजक भी दीवार पर उनका अनुसरण
करते हुए गये। जकर्याह भी उनके पीछे—पीछे
था। (जकर्याह योहानान का पुत्र था। योहानान
शमायाह का पुत्र था। शमायाह मत्तन्याह का
पुत्र था। मत्तन्याह मीकायाह का पुत्र था।
मीकायाह जक्कूर का पुत्र था और जक्कूर
आसाप का पुत्र था।) ३६ वहाँ जकर्याह के भाई
शमायाह, अज़रेल, मिल्लै, गिल्लै, माऐ, नतनेल,
यहूदा, और हनानी भी मौजूद थे। उनके पास
परमेश्वर के पुरुष, दाऊद के बनाये हुए बाजे थे।
परकोटे की दीवार को समर्पित करने के लिए जो
लोग वहाँ थे, उनके समूह की अगुवाई, विद्वान
एज्रा ने की। ३७ और वे स्रोत—द्वार पर चले गये।
फिर वे सामने की सीढ़ियों से होते हुए दाऊद के
नगर पैदल ही गये। फिर वे नगर परकोटे के शिखर
पर जा पहुँचे और इस तरह दाऊद के घर पर से
होते हुए वे पूर्वी जल द्वार पर पहुँच गए।
३८ गायकों की दूसरी मण्डली बांई ओर दूसरी
दिशा में चल पड़ी। वे जब परकोटे के शिखर की
ओर जा रहे थे, मैं उनके पीछे हो लिया। आधे
लोग भी उनके पीछे हो लिये। भट्ठों के मीनारों
को पीछे छोड़ते हुए वे चौड़े परकोटे पर चले गये।
३९ इसके बाद वे इन द्वारों पर गये—एप्रैम द्वार,
पुराना दरवाजा और मछली फाटक और फिर वे
हननेल और हम्मेआ के बुर्जों पर गये। वे भेड़ द्वार
तक जा पहुँचे और पहरेदारों के द्वार पर जा कर
रुक गये। ४० फिर गायकों की वे दोनों मण्डलियाँ
परमेश्वर के मन्दिर में अपने—अपने स्थानों को
चली गयीं और मैं अपने स्थान पर खड़ा हो गया
तथा आधे हाकिम मन्दिर में अपने—अपने स्थानों
पर जा खड़े हुए। ४१ फिर इसके बाद अपने—अपने
स्थानों पर जो याजक जा खड़े हुए थे, उनके नाम
हैं—एल्याकिम, मासेमाह, मिन्यामीन, मीकायाह,
एल्योएनै, जकर्याह और हनन्याह। उन याजकों ने
अपनी—अपनी तुरहियाँ भी ले रखी थीं। ४२ इसके
बाद ये याजक भी मन्दिर में अपने—अपने स्थानों
पर आ खड़े हुए: मासेयाह, शमायाह, एलियाजर,

उज्जी, यहोहानाम, मल्कियाह, एलाम और एजेर।

फिर दोनों, गायक मण्डलियों ने यिज्रहियाह की अगुवाई में गाना आरम्भ किया। ४३ सो उस विशेष दिन, याजकों ने बहुत सी बलियाँ चढ़ाईं। हर कोई बहुत प्रसन्न था। परमेश्वर ने हर किसी को आनन्दित किया था। यहाँ तक कि स्त्रियाँ और बच्चे तक बहुत उल्लासित और प्रसन्न थे। दूर दराज के लोग भी यरूशलेम से आते हुए आनन्दपूर्ण शोर को सुन सकते थे।

४४ उस दिन मुखियाओं ने कोठियारों के अधिकारियों की नियुक्ति की। ये कोठियार उन उपहार को रखने के लिए थे जिन्हें लोग अपने पहले फलों और अपनी फसल और आय के दसवें हिस्से के रुप में लाया करते थे। व्यवस्था के विधान के अनुसार लोगों को नगर के चारों ओर के खेतों और बगीचों से उपज का एक हिस्सा, याजकों और लेवियों के लिये लाना चाहिये। यहूदा के लोग जो याजक और लेवी सेवा कार्य करते थे उनके लिए ऐसा करने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे। ४५ याजकों और लेवियों ने अपने परमेश्वर के लिये अपना कर्तव्य पालन किया था। उन्होंने वे समारोह किये थे जिनसे लोग पवित्र हुए। गायकों और द्वारपालों ने भी अपने हिस्से का काम किया। दाऊद और उस के पुत्र सुलैमान ने जो भी आज्ञाएँ दी थीं, उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया था। ४६ (बहुत दिनों पहले दाऊद और आसाप के दिनों में वह धन्यवाद के गीतों और परमेश्वर की स्तुतियों तथा गायकों के मुखिया हुआ करते थे।)

४७ सो जरुब्बबेल और नहेम्याह के दिनों में गायकों और द्वारपालों के रखरखाव के लिये इस्राएल के सभी लोग प्रतिदिन दान दिया करते थे। दूसरे लेवियों के लिए भी वे विशेष दान दिया करते थे और फिर लेवी उस में से हारुन के वंशजों याजकों के लिये विशेष योगदान दिया करते थे।

नहेम्याह के अंतिम आदेश

१३ १ उस दिन मूसा की पुस्तक का ऊँचे स्वर में पाठ किया गया ताकि सभी लोग उसे सुन लें। मूसा की पुस्तक में उन्हें यह नियम लिखा हुआ मिला : किसी भी अम्मोनी व्यक्ति को और किसी भी मोआबी व्यक्ति को परमेश्वर की सभाओं में सम्मिलित न होने दिया जाये। २ यह नियम इस लिये लिखा गया था कि वे इस्राएल के लोगों को भोजन या जल नहीं दिया करते थे, तथा वे इस्राएल के लोगों को शाप देने के लिए बालाम को धन दिया करते थे। किन्तु हमारे परमेश्वर ने उस शाप को हमारे लिए वरदान में बदल दिया ३ सो इस्राएल के लोगों ने इस नियम को सुन कर इसका पालन किया और पराये लोगों के वंशजों को इस्राएल से अलग कर दिया।

४-५ किन्तु ऐसा होने से पहले एल्याशीब ने तोबियाह को मंदिर में एक बड़ी सी कोठरी दे दी। एल्याशीब परमेश्वर के मन्दिर के भण्डार घरों का अधिकारी याजक था, तथा एल्याशीब तोबियाह का घनिष्ठ मित्र भी था। पहले उस कोठरी का प्रयोग भेंट में चढ़ाये गये अन्न, सुगन्ध और मन्दिर के बर्तनों तथा अन्य वस्तुओं के रखने के लिये किया जाता था। उस कोठरी में लेवियों, गायकों और द्वारपालों के लिये अन्न के दसवें भाग, नयी दाखमधु और तेल भी रखा करते थे। याजकों को दिये गये उपहार भी उस कोठरी में रखे जाते थे। किन्तु एल्याशीब ने उस कोठरी को तोबियाह को दे दिया था।

६ जिस समय यह सब कुछ हुआ था, उस समय मैं यरूशलेम में नहीं था। मैं बाबेल के राजा के पास वापस गया हुआ था। जब बाबेल के राजा अर्तक्षत्र के शासन का बत्तीसवाँ साल था, तब मैं बाबेल गया था। बाद में मैंने राजा से यरूशलेम वापस लौट जाने की अनुमति माँगी ७ और इस तरह मैं वापस यरूशलेम लौट आया। यरूशलेम में एल्याशीब के इस दुखद करतब के बारे में मैंने सुना कि एल्याशीब ने हमारे परमेश्वर के मन्दिर के दालान की एक कोठरी तोबियाह को दे दी है। ८ एलयाशीब ने जो किया था, उससे मैं बहुत क्रोधित था। सो मैंने तोबियाह की वस्तुएँ उस कोठरी से बाहर निकाल फेंकीं। ९ उन कोठरियों को स्वच्छ और पवित्र बनाने के लिये मैंने आदेश दिये और फिर उन कोठरियों में मैंने मंदिर के पात्र तथा अन्य वस्तुएँ भेंट में चढ़ाया हुआ अन्न और सुगन्धित द्रव्य फिर से वापस रखवा दिये।

१० मैंने यह भी सुना कि लोगों ने लेवियों को उनका हिस्सा नहीं दिया है जिससे लेवीवंशी और गायक अपने खेतों में काम करने के लिये वापस चले गये हैं। ११ सो मैंने उन अधिकारियों से कहा कि वे गलत हैं। मैंने उन से पूछा, "तुमने परमेश्वर के मन्दिर की देखभाल क्यों नहीं की?" मैंने सभी लेवीवंशियों को इकट्ठा किया और मन्दिर में उनके स्थानों और उनके कामों पर वापस लौट आने को कहा। १२ इसके बाद यहूदा का हर कोई व्यक्ति उनके दसवें हिस्से का अन्न, नयी दाखमधु और

तेल मन्दिर में लाने लगा। उन वस्तुओं को भण्डार गृहों में रख दिया जाता था।

१३ मैंने इन पुरुषों को भण्डार गृहों का कोठियारी नियुक्त किया : याजक, शेलेम्याह, विद्वान सदोक तथा पादायाह नाम का एक लेवी। साथ ही मैंने पत्तन्याह के पोते और जक्कूर के पुत्र हानान को उनका सहायक नियुक्त कर दिया। मैं जानता था कि उन व्यक्तियों का विश्वास किया जा सकता था। अपने से सम्बन्धित लोगों को सामान देना, उनका काम था।

१४ हे परमेश्वर, मेरे किये कामों के लिये तू मुझे याद रख और अपने परमेश्वर के मन्दिर तथा उसके सेवा कार्यों के लिये विश्वास के साथ मैंने जो कुछ किया है, उस सब कुछ को तू मत भुलाना।

१५ उन्हीं दिनों यहूदा में मैंने देखा कि लोग सब्त के दिन भी काम करते हैं। मैंने देखा कि लोग दाखमधु बनाने कि लिए अँगूरों का रस निकाल रहे हैं। मैंने लोगों को अनाज लाते और उसे गधों पर लादते देखा। मैंने लोगों को नगर में अँगूर, अंजीर तथा हर तरह की वस्तुएँ ले कर आते हुए देखा। वे इन सब वस्तुओं को सब्त के दिन यरूशलेम में ला रहे थे। सो इसके लिए मैंने उन्हें चेतावनी दी। मैंने उनसे कह दिया कि उन्हें सब्त के दिन खाने की वस्तुएँ कदापि नहीं बेचनी चाहिए।

१६ यरूशलेम में कुछ सीरी नगर के लोग भी रहा करते थे। वे लोग मछली और दूसरी तरह की अन्य वस्तुएँ यरूशलेम में लाया करते और उन्हें सब्त के दिन बेचा करते और यहूदी उन वस्तुओं को खरीदा करते थे। १७ मैंने यहूदा के महत्वपूर्ण लोगों से कहा, कि वे ठीक नहीं कर रहे हैं। उन महत्वपूर्ण लोगों से मैंने कहा, "तुम यह बहुत बुरा काम कर रहे हो। तुम सब्त के दिन को भ्रष्ट कर रहे हो। तुम सब्त के दिन को एक आम दिन जैसा बनाये डाल रहे हो। १८ तुम्हें यह ज्ञान है कि तुम्हारे पूर्वजों ने ऐसे ही काम किये थे। इसलिए हमारे परमेश्वर ने हम पर और हमारे नगर पर विपत्तियाँ भेजी थीं और विनाश ढाया था। अब तुम लोग तो वैसे काम और भी अधिक कर रहे हो, जिससे इस्राएल पर वैसी ही बुरी बातें और अधिक घटेंगी क्योंकि तुम सब्त के दिन को बर्बाद कर रहे हो और इसे ऐसा बनाये डाल रहे हो जैसे यह कोई महत्वपूर्ण दिन ही नहीं है।"

१९ सो हर शुक्रवार की शाम को साँझ होने से पहले ही मैंने यह किया कि द्वारपालों को आज्ञा देकर यरूशलेम के द्वार बंद करवा कर उन पर ताले डलवा दिये। मैंने यह आज्ञा भी दे दी कि जब तक सब्त का दिन पूरा न हो जाये द्वार न खोले जायें। कुछ अपने ही लोग मैंने द्वारों पर नियुक्त कर दिये। उन लोगों को यह आदेश दे दिया गया था कि सब्त के दिन यरूशलेम में कोई भी माल असबाब न आने पाये इसे सुनिश्चित कर लें।

२० एक आध बार तो व्यापारियों और सौदागरों को यरूशलेम से बाहर ही रात गुजारनी पड़ी। २१ किन्तु मैंने उन व्यापारियों और सौदागरों को चेतावनी दे दी। मैंने उनसे कहा, "परकोटे की दीवार के आगे न ठहरा करो और यदि तुम फिर ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें बन्दी बना लूँगा।" सो उस दिन के बाद से सब्त के दिन अपना सामान बेचने के लिए वे फिर कभी नहीं आये।

२२ फिर मैंने लेवीवंशियों को आदेश दिया कि वे स्वयं को पवित्र करें। ऐसा कर चुकने के बाद ही उन्हें द्वारों के पहरे पर जाना था। यह इसलिये किया गया कि सब्त के दिन को एक पवित्र दिन के रुप में रखा गया है, इसे सुनिश्चित कर लिया जाये।

हे परमेश्वर! इन कामों को करने के लिए तू मुझे याद रख। मेरे प्रति दयालु हो और मुझ पर अपना महान प्रेम प्रकट कर!

२३ उन्हीं दिनों मैंने यह भी देखा कि कुछ यहूदी पुरुषों ने आशदोद, अम्मोन और मोआब प्रदेशों की स्त्रियों से विवाह किया हुआ है, २४ और उन विवाहों से उत्पन्न हुए आधे बच्चे तो यहूदी भाषा को बोलना तक नहीं जानते हैं। वे बच्चे अश्दौद, अम्मोन और मोआब की बोली बोलते थे। २५ सो मैंने उन लोगों से कहा कि वे गलती पर हैं। उन पर परमेश्वर का कहर बरसा हो। कुछ लोगों पर तो मैं चोट ही कर बैठा और मैंने उनके बाल उखाड़ लिये। परमेश्वर के नाम पर एक प्रतिज्ञा करने के लिए मैंने उन पर दबाव डाला। मैंने उनसे कहा, "उन पराये लोगों के पुत्रों के साथ तुम्हें अपनी पुत्रियों को ब्याह नहीं करना है और उन पराये लोगों की पुत्रियों को भी तुम्हें अपने पुत्रों से ब्याह नहीं करने देना है। उन लोगों की पुत्रियों के साथ तुम्हें ब्याह नहीं करना है। २६ तुम जानते हो कि सुलैमान से इसी प्रकार के विवाहों ने पाप करवाया था। तुम जानते हो कि किसी भी राष्ट्र में सुलैमान जैसा महान कोई राजा नहीं हुआ। सुलैमान को परमेश्वर प्रेम करता था और परमेश्वर ने ही सुलैमान को समूचे इस्राएल का राजा बनाया था। किन्तु इतना होने पर भी विजातीय पत्नियों के कारण सुलैमान तक को पाप करने पड़े २७ और अब क्या, हम तुम्हारी सुनें और

वैसा ही भयानक पाप करें और विजाति औरतों के
साथ विवाह करके अपने परमेश्वर के प्रति सच्चे
नहीं रहें।"
२८ योयादा का एक पुत्र होरोन के सम्बल्लत
का दामाद था। योयादा महायाजक एल्याशीब का
पुत्र था। सो मैंने योयादा के उस पुत्र पर दबाव
डाला कि वह मेरे पास से भाग जाये।
२९ हे मेरे परमेश्वर! उन्हें याद रख क्योंकि
उन्होंने याजकपन को भ्रष्ट किया था। उन्होंने
याजकनपन को ऐसा बना दिया था जैसे उसका
कोई महत्व ही न हो। तूने याजकों और लेवियों
के साथ जो वाचा की थी, उन्होंने उसका पालन
नहीं किया। ३० सो मैंने हर किसी बाहरी वस्तु से
याजकों और लेवियों को पवित्र एवं स्वच्छ बना
दिया है तथा मैंने प्रत्येक पुरुष को उसके अपने
कर्तव्य और दायित्व भी सौंपे हैं। ३१ मैंने लकड़ी के
उपहारों और एक निश्चित समय पर पहले फलों
को लाने सम्बन्धी योजनाएँ भी बना दी हैं।
हे मेरे परमेश्वर! इन अच्छे कामों के लिये तू
मुझे याद रख।